स्वामी रामप्रकाशजी महाराज कृत

निर्गुणराम भजनावली

प्रकाशक :

श्री सरस्वती प्रकाशन

सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर

श्री सच्चिदानन्दाय नमः

निर्गुणराम भजनावली

(एक सौ पच्चीस भजनों का निर्गुण भजन)

卐

रचयिता :

(भारतीय समाज दर्शन, पिंगल, रहस्यादि दर्जनाधिक्य शास्त्रों के लेखक)

धर्मवारिधि स्वामी रामप्रकाशजी महाराज

(रा.भा. रत्न आचार्य, कविभूषण, विद्या वाचस्पति, साहित्य शास्त्री)

श्री उत्तम आश्रम, कागामार्ग, जोधपुर (राज.) निवासी

卐

प्रकाशक :

धार्मिक ज्योतिष एवं मारवाड़ी पुस्तकों के प्रकाशक एवं विक्रेता

श्री सरस्वती प्रकाशन

सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर

संवत् २०५४ | द्वितीयावृत्ति | मूल्य १०-००

भूमिका

भूमिका के आनन्द शब्द !

प्राच्यविद्या का अध्यात्म गौरव गान, उपनिषद्-विवेचित तत्व एवं सन्त सिद्धान्त का रहस्य एक मात्र ब्रह्मज्ञान 'निर्गुण-चिन्तन' है। जो सर्वशक्ति सर्वबल होकर सर्वोन्नति का परमार्थ प्रयाण है, जिस गूढ़ तत्व को जानकर आत्म-विज्ञान में समस्त भ्रमनाओं का अन्त हो जाता है। यही ब्रह्मात्म एक्यता का "आत्मचिन्तन" ज्ञान प्राचीन से अर्वाचीन तक के भारतीय ऋषि मुनियों द्वारा सर्वदा खोज का विषय रहा है।

ब्रह्मनिष्ठ सतगुरु द्वारा प्राप्त वस्तु को साधन सम्पन्न जिज्ञासु के श्रवण मनन से निदिध्यासन किया गया, "स्वात्मानुभव" तत्व ही सर्वदुःख रहित परमानन्द स्थिति का स्वरूप है। गीता, भागवत् और रामायण-उपनिषद् एवं सन्तवाणी के निष्ठा-सिद्धान्त तत्व का अन्तर्हित प्रकाश जन्म-मरण के समस्त संकटों का मुक्ति मूल है।

भारतीय महर्षियों एवं रामानन्दीय विशिष्ठ द्वैत मत परम्परा की कृपा से साधन-विहित गुरु-सेवा का प्रसाद और शास्त्र उपार्जित-हृदय-सम्पादित ज्ञान को बाल्यावस्था संस्कारों से दीर्घकालीन स्वानुभव तर्क-कसौटी, पठन-विवेचन द्वारा परिमार्जित परमार्थ साधक-पुरुषार्थ और आत्मानन्द लहरी की मस्तानी फकीरी के नशे प्रस्फुटित वाणी निनाद उच्चारण हुआ-वह शब्द ही "निर्गुणराम भजनावली" पुस्तिका के रूप में प्रस्तुत है।

कल्याण भाजन वेदान्त प्रियसी, निर्गुण प्रेमी शाब्दिक त्रुटियों या अन्य प्रकार की रही अशुद्धियों की ओर ध्यान न देकर अपने सिद्धान्त मानद का रस लेंगे।

उराम आश्रम
जोधपुर

सन्त रामाप्रकाशाचार्य
वैशाख पूर्णिमा 2028

अथश्री स्वामी रामप्रकाश जी महाराज कृत
निर्गुणराम भजनावली की
--: अनुक्रमणिका :--

-: विषय सूची समाप्त :-

श्री स्वामी रामप्रकाशजी महाराज कृत

निर्गुण राम भजनावली

भजन (1) राग—पद

आवेला भाई आवेला, मोरे सतगुरु श्याम सुआवेला ।टेर।
निर्गुण बोध भक्ति गुण पूरण, नीति ज्ञान सुणावेला ।1।
भिन्न भिन्न खोल यथार्थ रोचक, महिमा बहुत बढ़ावेला ।2।
सामर्थ स्वामी ज्ञान बाण से, औगुण कपट कटावेला ।3।
ज्ञान पिटारी गुणन अटारी, भर भर बालद लावेला ।4।
"उत्तमराम" गुरु की गुण गाथा,
सखियां सब मिल गावेला ।5।
'रामप्रकाश' जिज्ञासु सारा, परमानन्द पद पावेला ।6।

भजन (2) राग—पद

गाता हूं भाई गाता हूं, मैं गणपति के गुण गाता हूं ।टेर।
पांच पचीस गुणन का स्वामी, जिनको शीश नमाता हूं ।1।
व्यापक है गण ईश गणेशा, निर्गुण बोध जनाता हुं ।2।
सब गुण आगर महासुख सागर, उनके शरणें जाता हूं ।3।
पूरन रूप सनातन चेतन, नाना भेद मिटाता हूं ।4।
रामप्रकाश गाय गुण गणपति, तामे उलट समाता हूं ।5।

भजन (3) राग पदः—लुहर फागुण

आया है भाई आया है, मेरे सतगुरु श्याम पधारया है ।टेर।
काम क्रोध मद लोभ काटके, मूल अज्ञान विडारा है । 1 ।
प्रेमय गत प्रमाण शंसय दो, दुःख चौरासी टारया है । 2 ।
ज्ञान लखाया भ्रम मिटाया, भिन्न भिन्न भेद उचारया है । 3 ।
रामप्रकाश उत्तम गुरु सामर्थ, मन के मांहि मारया है । 4 ।

भजन (4) रागः—लुहर फागुण

मैं निर्गुण हूं ब्रह्म अनादि, पूर्ण रूप अपराजी । टेर ।
एक दोय का संशय नाहीं, सब घट मांहि पसारा जी । 1 ।
भ्रांति दोष अध्यास कल्पना, कल्पित सभी विकाराजी । 2 ।
पांच तीन की परा अविद्या, निर्गु में नहीं धाराजी । 3 ।
व्यापक एक अखण्ड अनादी, नाम रूप से न्याराजी । 4 ।
रामप्रकाश परमानन्द पूर्ण, अचल अगोचर प्याराजी । 5 ।

भजन (5) राग

अनुभव ज्ञानी ज्ञान लखत है, भेद हमारा पावे है । टेर ।
परमानन्द अधिष्ठाम महात्म, पूर्ण ज्ञान लखावे है । 1 ।
भ्रांति दोष अध्यास काट के, निज में निज समावे है । 2 ।
द्वैत भ्रम का मूल मिटा के, उलटा आप बिलावे है । 3 ।
निर्गुण नागा सब से आगा, नहीं आवे है नहीं जावे है । 4 ।
रामप्रकाश अचल घन चेतन, साक्षी आप रहावे है । 5 ।

भजन (6) राग पद—लुहर फागुण

तारेला भव तारेला मोहिं, सतगुरु पार उतारेला । टेर ।

काम कुब्ड कच्छ मोह मगर मच्छ

ज्ञान बाण से मारेला । 1 ।

निर्गुण नाम जहाज बैठाकर, साधन सार उचारेला । 2 ।

तृष्णा नदी जल आशा सूखे, भ्रम रू कर्म संहारेला । 3 ।

सतगुरु उत्तम सदा गुरु सामर्थ, यम को मार विडारेला । 4 ।

'रामप्रकाश' परमानन्द निश्चय,

निर्भय निशान नगारेला । 5 ।

भजन (7) राग:—धनाश्री देश बधावा

सईयों ! लख आप अबानी ए ।

गुरु ब्रह्मज्ञानी खोल लखावे, साधन प्रमानी ए । टेर ।

ब्रह्मवेता संत वाक्य सुनावे, अमृत समानी ए ।

जनम मरण का शंसय काटे, अद्वैत दृडानी ए । 1 ।

निर्गुण का पद गूंगा जाने, खोवे मन बानी ए ।

अपना आप लखे शुद्ध जेतन, भेद मिटानी ए । 2 ।

श्रवण मनण निदिध्यासन द्वारा, आप दर्शानी ए ।

दरश्या देव भेव सब पाया, निज अधिष्ठानी ए । 3 ।

दृश्य द्वैत अज्ञान अविद्या, मूल बिहानी ए ।

'उत्तमराम' आप निज केवल. ज्ञेज्ञता ज्ञानी ए । 4 ।

मैं तूं नाही है ना नाही. अटल सुजानी ए ।

'रामप्रकाश' सोई तत चेतन, पूर्ण निरबानी ए । 5 ।

भजन (8) राग देश बधावा—धनाश्री पद

सईयों । गुरु अखण्ड अपारा ए ।

सतगुरु स्वामी आप अनामी, निज निरधारा ए ।टेर।
उत्पत्ति थिति प्रलय लय सारा, माया आधारा ए ।
सतगुरु निर्गुण अटल अभंगी, नित निरंकारा ए ।1।
पांचों तंत तीन गुण कर्ता, प्रपंच पसारा ए ।
जीव-ईश-माया कृत कारज, रञ्च ना विकारा ए ।2।
मैं तू तूल मूल नहीं माया, भ्रम विकारा ए ।
होय न मिटे, मिटे नहीं होवे, ज्यों का त्यों न्यारा ए ।3।
दूर पास न्यारा नहीं भेला, दृश्य नाहिं अकारा ए ।
'रामप्रकाश' बन्ध नहीं मुक्ति, निज ततसारा ए ।4।

भजन (9) राग देश बधावा—धनाश्री पद

सइयों ! निज भेद निहारा ए ।
सगुण निर्गुण का शंसय टूटा, किया निरधारा ए ।टेर।
जाग्रत मांही क्रिया सब वरते, तत्व विस्तारा ए ।
विश्व जीव ब्यालिस पुरे, करे प्रस्तारा ए । 1 ।
स्वप्न अवस्था तेजस भुगते, कल्पित आधारा ए ।
देखे सुने अनुभव के कारज, प्रपंच लपटारा ए ।2।
सुषोप्ति जीव प्राज्ञ को भोगे, आवर्ण आचारा ए ।
निज को भूल तत खोया, भ्रम अलुझारा ए ।3।
तुरिया साक्षी निर्गुण न्यारा, दृष्टा सुखधारा ए ।
'रामप्रकाश' अनूप अखण्डी, चेतन मतवारा ए ।4।

भजन (10) राग देश बधावा—फनाश्री

सइयों ! नित निर्गुण न्यारा ए ।
कर सौंजो लख ले अनुभौजी, भेद विडारा ए । टेर ।
तीन शरीर तीनूं गुण देवा, अभिमानी धारा ए ।
अवस्था तीन भोग त्रिपूटी, नाहि पसारा ए । 1 ।
वेद रू खानी युग ना बानी, दिशा फल चारा ए ।
नहिं अनुबन्ध चार नहिं मात्रा, भ्रम निवारा ए । 2 ।
पांचूं तत्व इन्द्रिय युग पांचों, विषय प्रस्तारा ए ।
कोश क्लेश रिपू नहीं पांचों, शुद्ध निरधारा ए । 3 ।
षट् उर्मि, लिंग, राग न क्रिया, षट् न विकारा ए ।
षट् प्रमाण पहुंच नहीं पाता, आप अपारा ए । 4 ।
द्वैत अद्वैत गुरु नहीं चेला, ना दृश्य दृष्टारा ए ।
'रामप्रकाश' अनामी अनघड़, एक अचारा ए । 5 ।

भजन (11) राग बधावा देश पद

सइयों ! लय योग विचारो ए ।
ज्ञान धारणा दृढ़कर साधन, भ्रान्ति विडारो ए । टेर ।
ईश वैराट, अकार ओमले, विश्व जीव निसारो ए ।
त्रिगुण बांट मिथ्या तत त्यागो, चेतन निरधारो ए । 1 ।
हिरण्य गर्भ ओम उकार ईश ले, तेजस चमकारो ए ।
शुक्षम भाश अध्यास निवारण, आप अपारो ए । 2 ।
अव्याकृत ओम मकार सुधारा, प्राज्ञ प्रहारों ए ।
कारण भूत मूला तज तूला, अज्ञान निवारो ए । 3 ।
अध बिन्दु साक्षी जीव अनूपा, चेतन अविकारो ए ।
नौ तत त्याग तीनों कर एकठ, योग सुधारो ए । 4 ।

जीव, ईश, ओम कर निर्णय, ये लय पाद हमारो ए।
'रामप्रकाश' द्वैत नहीं दरशे, आप उजारो ए।5।

भजन (12) राग – आसावरी पद

साधो भाई ! गुरु मुख ज्ञान विचारा।
एक निजानंद सब में पूर्ण, भ्रांति दोष विडारा। टेर।
भ्रांति आभास दोष स्मृत, अविद्या पुत्र पुकारा।
प्रमेय प्रमाण विपरीत असंभव, दोष उपय नहीं लारा।1।
दुःख में सुख अनित्य में नित्य, अशुचि में शुचि धारा।
निज भिन्न जग सत्या भ्रान्ति, अनात्म आत्म पारा।2।
यह सब दोष माया में कल्पित, निज ब्रह्म शुद्ध अपारा।
तमो अज्ञान मिटाकर अविद्या, लखे गुरु मुख प्यारा।3।
मुकुर ज्ञान, भक्ति निज लोचन, विरति रवि जब न्यारा।
'रामप्रकाश' आतम मुख लखता, निश्चय कर निरधारा।4।

भजन (13) राग—आसावरी पद

साधो भाई ! गुरु गम सैन अथाई।
जीव ब्रह्म का भेद मिटाया, दुतिया रही ना काई। टेर।
ना कोई जगत भगत ना दरशे, योग न भोग ठहराई।
चंद न सूरा साच न कूरा, द्वैत की धूर उडाई।1।
राव न रंका निर्भय निशंका, सवदृष्टि सम आई।
हूं तूं मेटया परमानन्द भेटया, निर्गुण अलख गोसाई।2।
माया मिथ्या त्रिगुण तत सारा, निज इक शुद्ध सजाई।
सतगुरु सोजी लख्या अनुभौजी, अनघड़ मांहि समाई।3।

अकथ कथ्या अलिख को लिखिया, केवल ब्रह्म निरदाई।
'रामप्रकाश' अधिष्ठान आतमा, केवल ब्रह्म निरदाई। 4।

भजन (14) राग—आसावरी पद

साधो भाई ! सुनो ज्ञान की बानी।
सोच समझ ततसार पिछानो, बानी मोक्ष निशानी। टेर।
हद से न्यारा बेहद नांही, बेगम बात पिछानी।
मानो मान बूझो कुछ मुझ से, सुनिये अकथ कहानी। 1।
निज निरचछा आभास कल्पना, अविद्या रचना ठानी।
एक हूं हाथ अनेक स्वरूपा, निर्गुण ज्ञान प्रमानी। 2।
गैवी बैठा गैब शुन ऊपर, निज घर सेज बिछानी।
सब मैं सता सकल से न्यारा, जल में रवि छिपानी। 3।
ठूंठ में पुरुष रू मृगतृष्णा जल, या विधि भास दृढानी।
भ्रांति अध्यास नाना विधि कल्पित,
दुःख सुख भोग भोगानी। 4।
मैं निज निर्गुण ब्रह्म अनादि, सच्चिदानंद अधिष्ठानी।
'रामप्रकाश' सदा निरदावे, अखण्ड अभेद अमानी। 5।

भजन (15) राग—आसावरी पद

साधो भाई ! ले तत्व ज्ञान विचारी।
सांचा सतगुरु समझ लखावे, दे दृष्टान्त अपारी। टेर।
जगत जंजाल दृश्य सब झूठा, भ्रांति रूप विस्तारी।
रज्जू में सर्प मिथ्या ज्यों भासे, या विधि जगत असारी। 1।
सीप में रूपा भोडल चमके, ठूंठ में पुरुष अचारी।

दोष अध्यास संशय कर दूरा, प्रमेय प्रमाण विडारी । 2 ।
हाटक में बहु भूषण ठाने, लोहा शस्त्र तरवारी ।
खाण्ड खिलौना देख उपाधि, कारण कार्य बलिहारी । 3 ।
मिश्री मिष्ठान ज्यूं रंग-मेंहदी में, व्यापक एक आधारी।
बुद्धि में भेद उपाधि कल्पित, मूला तूल बंधारी । 4 ।
कुटस्थ अंश साक्षी चैतन पूर्ण, परमानन्द ब्रह्म सुखारी ।
'रामप्रकाश' अप्रोक्ष निजानंद, अभय अमाप अपारी । 5 ।

भजन (16) राग—आसावरी पद

साधो भाई ! निज आतम दीदारा ।
आय न जाय सदा भरपूरा, सतचित रूप अपारा । टेर ।
आप अनामी सदा अरूपा, अचल अखण्ड निरधारा ।
रञ्च प्रपंच कलेश कला ना, द्वंद नहीं व्यवहारा । 1 ।
पांच तीन का खेल न भासे, नांहि जगत पसारा ।
सदा असंगी आइम अपेची, बंध मुक्ति नहीं धारा । 2 ।
कर्म रु विक्रम ज्ञान अज्ञाना, नहीं एक विस्तारा ।
विधि निषेध एक नहीं मोमे, नाहि विश्व अवतारा । 3 ।
कर्ता अकर्ता अपेक्षा नाहि, नाम रूप मन हारा ।
दृष्य दृष्टा बिन आदू केवल, नहीं हलका नहीं भारा । 4 ।
वचनातीत वाणी नहीं खानी, नाहीं क्रिया विकारा ।
पण्डित मूर्ख द्वैत न दरशे, सच्चिदानन्द निस्तारा । 5 ।
सदा अलागी सब में व्यापक, सब ही एक विचारा ।
'रामप्रकाश' अपेचो अनव्य, भरया एकरस प्यारा । 6 ।

भजन (17) राग—आसावरी पद

साधो भाई ! चार वाणी लख गाई ।
कर निर्णय मरहम कहूं सांचा, सतगुरु राह लखाई । टेर ।
नाद भेद चारों लख बानी, बीज परा दरशाई ।
होय अंकुर पश्यन्ति जागे, बढे वृक्ष गत आई । 1 ।
दोय पात मध्यमा पूर्ण, वैखरी डाल फैलाई ।
डाल में बीज बीज में तरुवर, अरस परस गमलाई । 2 ।
प्रथम संकल्प नाभि कंवल में, परा ओम में थाई ।
हृदय पश्यन्ति सोहं विचारे, ध्यान ज्ञान ठहराई । 3 ।
कंठ मध्यमा मनण करत है, निश्चय कर परखाई ।
मुख में बसे वैखरी श्रवण, अक्षर उचार कराई । 4 ।
गुरु महिमा उपदेश स्तुति, सोई वैखरी छाई ।
गुरु शिष्य प्रश्नोत्तर जामे, मध्यमा सो फरमाई । 5 ।
साँख्य कहै व्यापकता मैं हूं, सो है पश्यन्ति बाई ।
हूं तूं नहीं ब्रह्म अद्वैता, सो पद परा अचाई । 6 ।
तुरिया रूप है वाणी चारों, भेद भाव विसराई ।
'रामप्रकाश' संत कहै ज्ञाना, लखे जिज्ञासू भाई । 7 ।

भजन (18) राग—आसावरी पद

साधो भाई ! वाणी पांच विचारा ।
चार वाणी वैदाँत बखाने, युक्ति उत्तर सुन प्यारा । टेर ।
'परा' नाभि में संस्फुर फुरणा, सूक्ष्म अंश पसारा ।
अनुभव रूप भाव गम्य साक्षी, वाणी मूल उदारा । 1 ।

'पश्यन्ति' हृदय में अंकुरित अंकुर, करत विचारा सुधारा।
सत्य असत्य शोद्ध घट भीतर, क्षिप्र सिद्धांत उचारा। 2।
'मध्यमा' कंठा में निश्चयपूर्ण, अतिक्रम गति को धारा।
करे प्रेरणा पूरण पुरुषार्थ, वाणी का विस्तारा। 3।
'बैखरी' मुख में माया फैले, नाना बोल प्रस्तारा।
त्रिगुण भाव प्रकट सब खोले, जू कात्यूं निरधारा। 4।
'भावावेग' विचार विमर्श में, संघर्ष निश्चय परिवारा।
कवि की शक्ति वृति उर अन्तर, बिन बोले सुख सारा। 5।
पांचों वाणी गम कर थाके, सो ब्रह्म आप अपारा।
'राम' अवाणी चेतन, आवागमन विडारा। 6।

भजन (19) राग—आसावरी पद

साधो भाई ! एषणा शुक्ष्म विचारा।
जनम मरण को मूल वासना, सो है तीन प्रकारा। टेर।
'जाग्रतत' रजोगुण मध्यबासना, विकृत रूप पसारा।
तिर्यक योनि सर्पादिक पाले, पामर पुरुष उचारा। 1।
'स्वप्न' सतोगुण 'तनुवासना' होय विपाक अधारा।
मनुष्य देव गन्धर्वादिक होकर, भ्रमण जिज्ञासू धारा। 2।
'सुषोप्ति' तमोगुण 'धनवासना' हो परिणाम सहारा।
स्थावर जड़ असुर पशु आदिक, वषयी का प्रस्तारा। 3।
अवस्था, गुण, नष्ट वासना, जीवन मुक्त उदारा।
'रामप्रकाश' पाय परमानन्द, ज्ञानी मोक्ष पद प्यारा। 4

भजन (20) राग—आसावरी पद

साधो भाई ! पुरुष है चार प्रकारा ।
करके विभाजन खोल लखाऊं, विस्तृत करणीं विचारा ।टेर।
प्रथम 'पामर' पुरुष मलोना, विहीन विचारा अचारा ।
जनम मरण भवचक्र चौरासी, भ्रमण बारम्बारा । 1 ।
द्वितीय 'विषयी' वेद विधि चाले, कर्म कर्ता विस्तारा ।
विधि निषेध कर्मगति जाने, भर्मे त्रिलोक मंझारा । 2 ।
तृतीय 'जिज्ञासू तीन प्रकार के, तीव्र गलित मंद धारा ।
उत्तम मध्यम कनिष्ट काण्ड त्रय,
आनापासन कर्म प्यारा । 3 ।
चतुर्थ 'मूक्तात्मा' दो प्रकार है, विदेही निस्प्रह सारा ।
तामे विदेही कर्म लीनसुपुनि, निष्कर्मी वो न्यारा । 4 ।
'उत्तमराम' सतगुरु की कृपा, मुक्तानन्द अपारा ।
'रामप्रकाश' सोई अधिष्ठाना, सच्चिदानन्द अधारा । 5 ।

भजन (21) राग—आसावरी पद

साधो ! निर्गुण माला फेरो ।
हरदम सोज खोज घट भीतर, अन्तर मांहि हेरो । टेर ।
स्वास उश्वास में वासा कीजे, साधन खोज घनेरो ।
रमता राम सुमर कर दर्शन, होय गुरु को चेरो । 1 ।
घट घट मांहि राम रमत हैं, रोम रोम में डेरो ।
गुरु बिन कौन लखावे आतम, ज्ञान लखा निरभैरो । 2 ।
वस्तु नाम अक्षर कर चौगुन, पंचयुत दुगुन घरेरो ।

भाग आठ को युक्ति से दीजे, राम रमे चौ फेरा । 3 ।
घटे बढ़े ना आवे जावे, व्यापक पूर्ण सेरो ।
'रामप्रकाश' अनुभव पद लखिया, मेट चौरासी केरो । 4 ।

भजन (22) राग—आसावरी पद

साधो भाई ! निर्गुण माला मेरी ।
सतगुरु की गम पाई सहजे, स्वासो श्वा में फेरी । टेर ।
स्वासा डोरी ध्यान लगोरी, सुरत एकात में हेरी ।
ओम शब्द सोहं कामणियां, गणिया हरदम लेरी । 1 ।
मनवा भटके मणता सटके, संशय भ्रम मिटेरी ।
आसन बांध डोले मस्ताना, तोड़ माया मेरी तेरी । 2 ।
योग न भोग जनम नहीं मरणा, नहीं चौरासी मेरी ।
निर्गुण सर्गुण का संशय टूटा, मुक्ति भई है चेरी । 3 ।
लागी लगन मगन थिर होया, लखिया एक चौफैरी ।
आप बिना कोई और न दरशया, रमता राम निरखेरी ।4।
सब का स्वामी आप अनामी, दृष्ठ मुष्ठ बिन घेरो ।
'रामप्रकाश' सदा अविनाशी, आप अगोचर टेरी । 5 ।

भजन (23) राग—आसावरी पद

साधो भाई ! निर्गुण का पद झीना ।
सतगुरु साधन की लख युक्ति, लखे संत परवीना । टेर ।
इन्द्रियां खोज सके नहीं कबहूं, दृष्ठ मुष्ठ ते हीना ।
मनवाणी गम कर कर थाके, जप तप प्रपंच कीना । 1 ।
पक्षी पंथ मीन का मारग, या विधि लक्षण लीना ।

निश्चय जाण परम पद गहिया, रहया नहीं गुण तीना । 2 ।
सब में सता सकल से न्याया, रमझ समझ कर चीना ।
आपा उलट समाया अपना, द्वैत भ्रम से क्षीना । 3 ।
बोध स्वरूप अनामी चेतन, निरवाणी सुख भीना ।
'रामप्रकाश' अचल घन साक्षी, निज केवल मद छीना । 4 ।

भजन (24) राग—आसावरी पद

साधो भाई ! सातों वार सजाई ।
गुरु पुरुषार्थ ईश्वर कृपा, निश्चय भया पद पाई । टेर ।
'सोमवार' सुकृत कर गाढ़ा, जप तप ध्यान धराई ।
स्मरण सार सर्व सुख खोया, माया रूप भुलाई । 1 ।
'मंगलवार' मौज सब त्यागी, जगत भोग विसराई ।
तीव्र वैराग तपाया मन को, मंगल स्वरूप अथाई । 2 ।
'बुधवार' बोद्ध कर युक्ति, साधन सतसंग आई ।
श्रवण मनण निदिध्यासन करके, संशय मूल मिटाई । 3 ।
'गुरुवार' को गुरु पद जाण्या, भ्रम रहया नहीं कांई ।
लागी लगन मगन मन खोया, गणण तार खिचाई । 4 ।
'शुक्रवार' को शुभ पद धरिया, निर्गुण मंदिर मांई ।
अटल अगोचर शुक्रत सागर, दर्शन किये अघजाई । 5 ।
'थावर वार' थिति उलट समाया, निज स्वरुपसुखदाई ।
आय न जाय अथिर थिर नाहि, सदा अद्वैत अजाई । 6 ।
'सूरजवार' ज्ञान का सूरज, दशों दिशा चमकाई ।
'रामप्रकाश' अविद्या तम भागा, आप एक रस थाई । 7 ।

भजन (25) राग:—आसावरी पद

साधो भाई ! शोड्ष कला लखाई ।
गुरु कृपा ईश्वर की आदू, वेद पुरुषार्थ आई । टेर ।
आदि अमावश आशा थाँकी, वृति वैराग सजाई ।
ब्रह्म लोकादि भोग विसारे, फक्कर फकीरी पाई । 1 ।
एकदम एक लगी लय पूरण, गुरु शब्द गहराई ।
शुभ कर्मानु शोधन शोभा, एक ब्रह्म लो छाई । 2 ।
बीज दर्स्या शुद्ध बीज मंत्र को, होय अंकुर फलाई ।
भाव उपासन कला बढत ही,
फल की आश मिटाई । 3 ।
तीज तत्व का दर्शन पाया, त्रिगुण तार पिटाई ।
गुणातीत चेतन चित लागा, माया तीन विलाई । 4 ।
चौंथ लखी चित चार भूमिका, चेतन चित लगाई ।
चिंतन चोर चर्म पथ खोया, अपना आप वृढाई । 5 ।
पांचम भेद पाँच तज सारा, पंजीकृत परचाई ।
परचा थाय मरहम को जाण्या, प्रपंच खोज खपाई । 6 ।
छठ्ट को छोह मोह भय भागा. छः दर्शन मत काई ।
छीलर छेह गेह तज भाया. छठ्टे घर लिव लाई । 7 ।
सातम सात लख्या शुद्ध चेतन. साधन सर्व सजाई ।
शर्म धर्म का संशय काट्या. सत्य कला सुखदाई । 8 ।
आठम आडबन्ध कस आडो. आसन योग सधाई ।
इडा पिंगला सुषमण नाड़ी. प्राण गति गम्य ताई । 9

नवमी नौ द्वारे को रोक्या, विषय कर्म शम थाई ।
नहीं नहीं का बज्या नगरा, इन्द्रिय प्राण थकाई । 10 ।
दशमी दोष दसों तज दूरा, दसवें देव दरसाई ।
दर्शन पाय दर्द दुःख खोया, मस्त भया मन माई । 11 ।
ग्यारस ग्यारहवाँ और न भासे मन चित्त एक मिलाई ।
द्वैत गया दर आप पिछाण्या, अपना आप अजाई । 12 ।
बारस बाहिर भीतर चेतन, पूरण धन परसाई ।
बारह बाट माया के आगे, बेगम पुरी बसाई ।
तेरस तार तत्व मय तणके, तत्व स्वरूप बताई । 13 ।
तेरा मेरा खोज विलाया, व्यापक आप अमाई । 14 ।
चौंदस चौदह लोकों ऊपर, अपणा आसण लाई ।
चौदह त्रिपुटी मुझ में नाहि, मैं साक्षी गुण राई । 15 ।
पूनम पूर रहया सब घट में, अनन्य अचल गोसाँई ।
सोलह कला सदा थिर उज्वल, घटण बढ़ण कछनाई। 16 ।
सर्व दिशा परिपूरण चेतन, सारी कला समाई ।
'रामप्रकाश' परमानंद निजहुं, निज का निज अनुमाई ।17।

भजन (26) राग—आसावरी पद

साधो भाई गुरु गम रहस्य लीना ।
भ्रमरु भ्राँति अज्ञान विडारा, आत्म तत्व पद चीना ।टेर।
साधन सार विचार धारणा, धार विचार प्रवीना ।
त्याग प्रपंच असारा बसारा, निर्भय बजाजा बीना । 1 ।
सतगुरु सनमुख श्रवण मनण, निदियासन भी कीना ।

योग ज्ञान युक्ति गम लेकर, स्वाँसो श्वास चढ़ जीना। 2।
त्रिवेणी त्रिकूटी महल भृकूटी, झिलमिल ज्योति तीना।
झणणण रणणण गणणण दसवें, बाजा बाजे कीना। 3।
अपणा दर्शण आप मिलाया, सुरत स्वामी संग झीना।
'रामप्रकाश' एकरस निर्गुण, बिन घन अंग के भीना। 4।

भजन (27) राग—आसावरी

साधो भाई ! गुरु की गम कोई पावे।
गम को दम समावे साँचा, अपना मूल मिटावे। टेर।
मन की आशा ममता मारे, त्वंता तज मद हावे।
साधन सार जार चित फुरणा, स्मरण में चित लावे। 1।
परम विवेक होय वैरागी, अपना इष्ट निभावे।
हाण लाभ में होय संतोषी, प्रारब्ध गुजर चलावे। 2।
काट पाखण्ड अहंता कुल सारा, समदा माहि समावे।
शम शाम्य बोध पुष्प ले, अपने भेंट चढावे। 3।
देही सत्य असत देह जाने, सत की पूजा गावे।
'रामप्रकाश' गया नहीं आया, अपना आप रहावे। 4।

भजन (28) राग—आसावरी पद

साधो भाई ! शब्द गुरु का बंका।
ज्ञान ध्यान के ऊपर लागा, निर्भय नगर का डंका। टेर।
आप दरश्या निज को परश्या, भेद नहीं रंच जंका।
आप बिना कोइ और न दरश्या,
नहीं उत्तर नहीं शंका। 1।

अनुभव डंका बाजत बंका, निर्भय निशान निशंका ।
द्वैत अद्वैत की गति विलानो, समता राव रू रंका । 2 ।
कर्म भ्रम संशय अविद्या में. जलो समूली लंका ।
लेश कलेश प्रपंच न भाशे. नहीं त्रिगुण का पंका । 4 ।
सच्चिदानन्द अनूप अखण्डो, व्यापक निर्गुण अंका ।
'रामप्रकाश' परमानन्द पूरण, अधर सधर में टंका । 4 ।

भजन (29) राग—आसावरी पद

साधो भाई ! बेगम नगर दिवाना ।
देश दिवाना पावे कोई, छूटे आना जाना । टेर ।
धरना अधर अचल नहीं चलता, महरम का अनुमाना ।
षट् प्रमाण का लेखा नाहीं, वाणी चार विलाना । 4 ।
ज्ञानी पहुंचे नगर बसावे, अपने में गलताना ।
शुन्य शहर में अक्षय सेज पर, मौजो मौज मस्ताना । 2 ।
गम बिन गाम अगम नहीं निगमा, बेगम बेगम माना ।
सबका स्वामी आप अनामी, व्यापक सो अधिष्ठाना । 3 ।
सब में पूरण सता समानी, दृश्य द्वैत मिटाना ।
'रामप्रकाश' एक रस केवल, निज में निज समाना । 4 ।

भजन (30) राग—आसावरी पद

साधो भाई ! बेगम कौन ठिकाना ।
कर महरम आसोजी धावो, निश्चय मुक्त समाना । टेर ।
पांच तीन का नहीं पसारा, शब्द सुरत नहीं ठाना ।
गम कर ज्ञान धीरज धर ध्यानी, उलटा आप समाना । 1 ।

गूंगा को गति गूंगा ध्यावे, कैसे करत बखाना ।
मनवाणी की गति मति थाके, कैसे करत पयाना । 2 ।
गिरा अनयन नयन बिन बानी, गोचर गति विलाना ।
क्या गुण गान कथन कर भाखे, निज में निज गलताना। 3
द्वैत भ्रम का दावा मिटग्या, सुक्ष्म सो परवाना ।
'रामप्रकाश' अधिष्ठान आपसो, और न दूजा मानो । 4

भजन (31) राग—आसावरी पद

अब हम आप सदा सुखदाई ।
आप बिना कछु और न भाखे, परमानन्द निरदाई । टेर
खानी खानो दुविधा नाहीं, अगम निगम विसराई ।
स्मृति दोष आभास कल्पना, नहीं अविद्या दरसाई । 1
वेद न वेद पावन नहीं पाणो, कर्म कलेश न काई ।
पांच तीन का नहीं पसारा, सृष्टि सर्व विलाई । 2
कहणा अकहणा हूं तूं नाहीं, नहीं नहीं है है नाहीं ।
अचल अभंगी सदा असंगो, अटल अगोचर पाई । 3
सत अधिष्ठान सर्वमुख दृष्ठा, चेतन एक गोसांई ।
रामप्रकाश' अनूप अखण्डी, परम अद्वैत रहाई । 4

भजन (32) राग—आसावरी पद

साधो भाई । कैसा मांगे यम लेखा ।
जनम मरण की खोई वासना, खोई कर्म की रेखा । टेर
सतोगुण अंश अन्तः करण देवा, अधिदेव सृष्टि सेखा ।
तमोगुण अंश तत्व पंच प्रपंच, और पचीसों पेखा । 1

रजोगुण उत्पति इन्द्रिय दश ही, प्राण दशों पर मेखा।
तीनों पसारा मूल समाया, उलट आपको देखा। 2 ।
संचित ज्ञान अग्नि कर जाल्या, प्रारब्ध भोग का भेखा।
क्रियमाण अनिच्छा वितरण, या विधि देख परेखा। 3 ।
मोमें नहीं उहीं मैं उनमें, सत स्वरूप मैं बैखा।
'रामप्रकाश' युद्ध अधिष्ठाना, आप अद्वैत अलेखा। 4 ।

भजन (33) राग—आसावरी पद

साधो भाई ! जीव स्वरूप ललाना।
आप परख बिन भटक चौरासी, अपना रूप भूलाना। टेर।
पांच ज्ञानेन्द्रिय चार अंतःकरण, पांच कर्मेन्द्रिय ठाना।
अविद्या-अज्ञान भोग वासना, पंच भूत पंच प्राना। 1 ।
तन मन वाणी क्रिया जो सचित, कर्म काम कहाना।
या आठों, में चिदाभास दो, सोई जीव दृढाना। 2 ।
शुक्ष्म शरीर के आठों तत्वा, छिन्न भिन्न वितय षिलाना।
जीवन मुक्ति पावे सत ज्ञानी, गुरु मुख रमक्ष पठाना। 3 ।
जनम मरण का संशय नाहिं, मैं निर्गुण अधिष्ठाना।
'रामप्रकाश' सर्व में व्यापक, ब्रह्म स्वरूप निखाना। 4 ।

भजन (34) राग—आसावरी पद

आपा सोई ! सत का सत दरशाया।
सत बिना तत और नहीं रंचक, सत को सत परखाया। टेर।
सत सुख परम चिदानन्द पूरण, अनन्य अटल अजाजा।
अचल सनातन है नहीं नाहीं, अखण्ड अगोचर राया। 1 ।

नाम व रूप रंग नहीं कर्मा, पिण्ड ब्रह्मण्ड नहीं काया ।
चार वाणी खाणी खेचर, ज्ञय ज्ञाता नहीं गाया । 2 ।
ध्येय ध्याता नहीं ध्यान धर्म ना, सत असत निरमाया ।
एक नहीं पल दोय न विपला, कहण अकहण ढाया । 3 ।
निज का निज सो अपना आपा, तत्व कूटस्थ समाया ।
'रामप्रकाश' सोई सत सोई, अधिष्ठाना निरदाया । 4 ।

भजन (35) राग—आसावरी पद

सोई तत ! अपना आप सत जोई ।
नित निर्गुण सत चेतन आनन्द, ज्ञान ध्यान गम खोई ।टेर।
तीन काल नहीं माया बंधन, जनम न मारणा होई ।
षट् विकार पच कोश अतीता, देह न कारण गोई । 1 ।
अविद्या जीव ईश नहीं माया, चिदाभास नहीं पोई ।
आदि ना अंत ना ख्याली, करण क्रिया नहीं दोई । 2 ।
अनुलोम प्रतिलोम न होता, शुन बिन तत सत सोई ।
अचल सनातन सो ब्रह्म आदू, आप सदा अनुभोई । 3 ।
नाम न रूप वाणी नहीं खाणी, दृष्टा दृश्य नहीं कोई ।
'रामप्रकाश' अनामी पूरण, एक अखण्ड निरभोई । 4 ।

भजन (36) राग काफी पद—छन्द डेढुआ

ज्ञान भया तब हो गलताना,
सर्व कर्म तज दोना, निज में लीना । टेर।
गुरु गम चीन्हा आतम पूरण,
प्रेम रसामृत पीना, निज में लीना । 1 ।

पाय फकीरी सत की सीरी,
जान वृथा जग जीना, निज में लीना । 2 ।
जीवन मुक्ति फल पाया पाँचों,
राह लिया यह झीना, निज में लीना । 3 ।
निर इच्छा हो नित निरदावे,
साधन सत का कीना, निज में लीना । 4 ।
'रामप्रकाश' पाय पद पूरण,
काटयां पांच रू तीना, निज में लीना । 5 ।

भजन (37) राग—छन्द डेढुआ

जीवन मुक्ति के फल यह पांचो,
पावे गुरु मुख प्यारा, हो सचियारा । टेर ।
जल्पावाद रु त्याग वितंडा, सत्य संवाद सुधारा । 1 ।
ब्रह्म निश्चय सत एक अखण्डा, ज्ञान रक्षा इतबारा । 2 ।
पाँच कलेश काट मन शंका, दुःख निवृति धारा । 3 ।
तन मन वाणी शुद्ध कर तापी, तप सो वेद उचारा । 4 ।
सच्चिदानंद प्राप्त सत आतम, अपना सुख अपारा । 5 ।
'रामप्रकाश' निर्भय हो ज्ञानी, जीवनमुक्त मतबारा । 6 ।
जीवन मुक्ति के पांच प्रयोजन, जावे गुरुमुख प्यारा । 7 ।

भजन (38) राग काफी—छन्द डेढुआ

पांच ज्ञानेन्द्रिय खोल बखानी,
कर वश ज्ञान विचारा, मोक्ष मंझारा । टेर ।
'श्रोत्र' शब्द वश मृगाबंधिया, ता सम मत बंध प्यारा । 1 ।
'त्वचा' स्पर्शवश हाथी पड़िया, कामवशी दुःख धारा । 2 ।

'चक्षु' रूप वश पतंग सुजरिया, एक ही दुःख भण्डारा । 3 ।
'जिभ्या' रस वश मच्छली वेधी, कांटा मुख में डारा । 4 ।
'घ्राण' गन्ध वश भंवर फूल में, बंधिया विषय विकारा। 5 ।
'रामप्रकाश' त्याग मन पांचों, लख ब्रह्म आप अपारा । 6 ।

भजन (39) राग काफी—छन्द डेढुग्रा

पांच कर्मेन्द्रिय ज्ञानी गावे,
विषय तंत विस्तारा ।। कर वश प्यारा । टेर ।
'वाक्' शब्दा शब्द अग्नि देव है, तंत आकाश उचारा । 1 ।
'पानी' लेन देन इन्द्र कर्मा, वायु तंत पसारा । 2 ।
'पाद' गमना गमन वामन पूरा, तेज तंज सुविचारा । 3 ।
'उपस्थ' रति मूत्र है ब्रह्मा, जल का अङ्ग सुधारा । 4 ।
'गुदा' त्याग मल यम है देवा, पृथ्वो अंश पुकारा । 5 ।
'रामप्रकाश' रूप निज अपना, इन ते परे अपारा । 6 ।

भजन (40) राग काफी—छन्द डेढुआ

पांच कोश का निर्णय सुनज्यो,
इनका बहु विस्तारा । जाल पसारा । टेर ।
'अन्नमय' मात पिता रज वीरज, पांच तत्व युत सारा । 1 ।
'मनोमय'पांचज्ञानेन्द्रिय मन सो,मिलके कर व्यवहारा । 2 ।
'प्राणमय' पंच प्राण संभावे, पंच कर्मेन्द्रिय धारा । 3 ।
'विज्ञान' पंच बुद्धि संग जाबो, पंच ज्ञानेन्द्रिय लारा । 4 ।
'आनन्द' प्रिय मोंद प्रमोदा, वृति सुषोप्ति प्यारा । 5 ।
'रामप्रकाश'निश्चय सत निष्ठा, पंच कोशातीत पारा । 6 ।

भजन (41) राग काफी पद — छन्द डेढुआ

पांच क्लेश बखाने ज्ञानी,जामे यह संसारा। भरमे सारा ।टेर।
'अविद्या' मूला तूला तंत गुण, दुख में सुख यूं चारा । 1 ।
'अस्मिता' चित विक्षेप कहावे, भटके जगत मंझारा । 2 ।
'राग' जगत में प्रीति दूषण, अशुचि में शुचि धारा । 3 ।
'द्वैष' क्षोभ जग वैर भावना, नाना कर व्यवहारा । 4 ।
'अभिनिवेश' सो मरण भयातुर, त्याग पांच ये प्यारा । 5 ।
'रामप्रकाश' आतमा केवल, सच्चिदानंद निज न्यारा । 6 ।

भजन (42) राग काफी— छन्द डढुआ

पांच प्राण वेदान्त बखाने,
सकल जगत का प्यारा । आप सहारा । टेर ।
'प्राण' हृदय निशिवासर क्रिया, छः सो इक्कीस हजारा ।1।
'उदान' कण्ठ में खान पान का, बिवेक विभाग विचारा ।2।
'व्यान' पूर्ण है सर्व देह में, संधी चलावत सारा । 3 ।
'समान' नाभि अन्न जल निर्णय, उत्तम मध्यमक नष्ठारा ।4।
'अपान' गुदा में मल त्याग कर, देह का करे सुधारा । 5 ।
'रामप्रकाश' ब्रह्मानन्द निष्ठा, प्राणातीत अपारा । 6 ।

भजन (43) राग:—काफी छन्द डेढुआ

पांच कहे उप प्राणी ज्ञानी संत,
वास कर्म भिन्न सारा, प्रकट पुकारा । टेर ।
'क्रम' नैत्र वास पलक में, चक्षु उन्मिल खुलद्वारा । 1 ।
'किरकल' घ्राण छींक का कारज, अपना कर्म संभारा । 2 ।

'देवदत' तालू जंभाई, करे नित्य सुविचारा । 3 ।
'नाग' हृदय डेकार कर्म कर, तन में आनन्द कारा । 4 ।
'धनज्जय' देह पुष्ट हो पूर्ण, मरण फुलावे प्यारा । 5 ।
'रामप्रकाश' ब्रह्मात्म निष्ठा, प्राणतीत अपारा । 6 ।
तंत पांच का सर्व पसारा,

भजन (44) राग—छन्द डेढुआ

जगत रचा हद भारी । कर विस्तारी ।टेर।
शोक काम रु क्रोध मोह भय, नभ तंत पंच पसारी । 1 ।
प्रसारण धावन वलन चलन कर, वायु आकुचन धारी । 2 ।
निद्रा तृषा क्षुधा कान्ति, आलस तेज उचारी । 3 ।
लार स्वेद रु मूत्र - शुक्र ये, शोणित जल भण्डारी । 4 ।
रोम त्वचा रु नाड़ी मांस पंच, हाड पृथ्वी अंश यारी । 5 ।
'रामप्रकाश' पंचीकरण पूरा, देह स्थूल विचारी । 6 ।

भजन (45) राग काफी—छन्द डेढुआ

तीन अवस्था खोल लखाऊं,
कर निर्णय विस्तारा । ज्ञान विचारा ।टेर।
'जाग्रत' नैन क्रिया शक्ति त्रिश्व, रजो थूल अज प्यारा । 1 ।
'स्वप्न' कंठ ज्ञान औ तेजस, सतो शुक्ष्म हरि धारा । 2 ।
'सुषोप्ति' हृदय द्रव्य रू प्राज्ञ, तमो आनन्द हर मारा । 3 ।
'रामप्रकाश' तुरिया तत चेतन, साक्षी सिरजण हारा । 4 ।

भजन (46) राग काफी—छन्द डेधुआ

दो इन्द्रिय है अति प्रबल, वश में होत नाही है दुःखदाई । टेर ।

एक उपस्थ रू रसना द्वितीय, योगी जीते मन लाई । 1 ।
लोक परलोक ब्रह्मादिक सारे, सुर नर सब भटकाई । 2 ।
देहधारी तत चर अचर जन्तु, इन के वश सब थाई । 3 ।
'रामप्रकाश' संत ब्रह्मज्ञानी, दो जीते मुक्ति मांही । 4 ।

भजन (47) राग—काफी छन्द डेढुआ

दशो अंग यह सत्य धर्म के, धारे व्रत महाना। भक्त सुजाना। टेर
क्षमा अहिंसा सत्य मृदुता, दान दया दम माना । 1 ।
तन मन वाणी शुद्ध तपस्या, शोच रू शील निभाना । 2 ।
तृष्णा हीन काट मन संशय, होय सदा निरवाना । 3 ।
साधन सहित काट जग फन्दन, पावे पद कल्याना । 4 ।
'रामप्रकाश' पुरुषार्थ पावे, परमानन्द अधिष्ठाना । 5 ।

भजन (48) राग—काफी छन्द डेढुआ

दशो अंग यह पाप के प्यारे,
नर्क ले जावत सारे । हरिजन ढारे । टेर ।
चोरी यारी हिंसा तन के, तीन दोष संत मारे । 1 ।
चिंता तृष्णा औगुन परके, मन के दोष विडारे । 2 ।
निंद्या झूंठ कठोर चपलता. चार वाणी के तारे । 3 ।
तन मन वाणी दोष दशों यह. भक्ति ज्ञान ले जारे । 4 ।
'रामप्रकाश' निजानन्द पावे. जावे मुक्त दुवारे । 5 ।

भजन (49) राग—काफी छन्द डेढुआ

साधन अष्ट ज्ञान के पूर्ण.
प्रकट करूं पुकारा । भिन्न भिन्न सारा । टेर ।

विवेक वैराग्य रु शम दम श्रद्धा, समाधार सुविचारा । 1 ।
उपराम तितिक्षा और मुमुक्षता,यह साधम लख चारा। 2 ।
सतसंग सतगुरु ब्रह्म निष्ठिकर,ब्रह्म क्षौ।त्रय सुख धारा। 3 ।
श्रवण मनण कर ब्रह्मज्ञान निज,निदिध्यासन निस्तारा। 4 ।
तत त्वं पद शोधन कर साधन, निज गम साक्षात्कारा । 5 ।
'रामप्रकाश' अचल लख आतम, सच्चिदानन्द कारा । 6 ।

भजन (50) राग—काफी छन्द डेढुआ

आठोंअङ्ग योग के साधन,योगीजन उर धारे। पापविडारे।टेर।
सत्य अहिंसा शील अपरिग्रह, अस्तेय पंच यम सारे । 1 ।
शौच संतोष तप (ईश) प्रीणधाना,स्वाध्याय नियम पुकारे।2।
सिद्ध पद पूरक रेचक कुम्भक, प्राणायाम उतारे । 3 ।
प्रत्याहार धारणा ध्याना, दोय समाधि प्यारे । 4 ।
षट् क्रिया कर चक्र साधना, नागिन मुख पलटारे । 5 ।
'रामप्रकाश' अजब सत पूरण, दशवें कर दीदारे । 6 ।

भजन (51) राग—काफी छन्द डेढुआ

अपना आप भूलाना प्यारे,अपन आप बंधाना।मोहफंसाना।टेर।
मकरी जाल बिछाया भारी, फंसिया जाल महाना । 1 ।
शुकनल्ली पर संशय भूला, भ्रम मांही भरमाना । 2 ।
बन्दरमुठी कुम्भ में फंसिया, लालच संग लचकाना । 3 ।
सिंह स्वरूप भूल छेरी संग, अपना स्वरुप न जाना । 4 ।
'रामप्रकाश' ब्रह्म खुद आपा, जीव कहाय मराना । 5 ।

भजन (53) राग—काफी छन्द डेढुआ

आपहीव्यापकपूर्णसबमें,घटमठमांही अपारासोच विचारा।टेर।

मेंहदी मेंरंग, मिश्री मिटासा, पट में सूत सुधारा । 1 ।
शस्त्रों में ज्यूं लोहा धन है, हाटक भूषण मझारा । 2 ।
बासन में ज्यूं भू अंश पृथ्वी, घृत दूध में प्यारा । 3 ।
रस ईख में, जल वृक्ष में, बीज वृक्ष इक सारा । 4 ।
भासे सब विपरीत अध्यासा, मृग तृष्णा ज्यूं विडारे । 5 ।
'रामप्रकाश' सच्चिदानंद केवल, नभ सम व्यापक न्यारा।6।

भजन (53) राग—काफी छन्द डेढुआ

तीन शरीर कहूं भिन्न भिन्न के,
समझ वेदान्त विचारा । गुरु राम प्यारा ।टेर।
पांच संत पचीस प्रकृति, अनुभव स्थूल पुकारा । 1 ।
पांच कर्मेन्द्रिय प्राण पांच मन, बुद्धि सूक्ष्म तन सारा । 2 ।
अपना रुप भूल आवर्ण में, कारण आनन्दमय कारा । 3 ।
अघ पुण्य घर भोगन वाला, कारण सूक्ष्म देह जारा । 4 ।
'रामप्रकाश' देह ते न्यारा, जड़ वत त्याग असारा । 5 ।

भजन (25) राग:—काफी छन्द डेढुआ

अष्ट पुरी तन सूक्ष्म वासा, गमना सुधारा। देह का धारा।टेर।
पंच ज्ञानेन्द्रिय, चार अंतकरण, पंच कर्मेन्द्रिय प्यारा । 1 ।
पंचभूत औं पंच प्राण लो, अविद्या-अज्ञान निहारा । 2 ।
तन मन वाणी क्रिया कर्म ये, भोग वासना भारा । 3 ।
'रामप्रकाश' जीव सूक्ष्म तन, चेतन चिदाभास न्यारा । 4 ।

भजन (55) राग—काफी छन्द डेढुआ

समन समझोसतकरदीदारा,तूंसबकासरदारा।आपअपरारा।टेर
आप बन्धावा आप भूलाना, मोह आहर्ण में प्यारा । 1 ।

तेरे हुक्म में सब ही चाले, तंत पांच गुण सारा । 2
साधन युत निःसंशय होकर, लखो ब्रह्म शुद्ध न्यारा । 3
'रामप्रकाश' निर्णय कर निज का, पावे निज निस्तारा । 4

भजन (56) राग—काफी छन्द डेढुआ

आठधर्म कहूं खोल जीवके,समझोरिहगिजनप्यारा।जीवउद्धारा
अल्पशक्तिपन, परिच्छिन्नपना, नानापना विचारा । 1
अल्पज्ञपना अरु पराधीनपना, असमर्थपना ये सारा । 2
अविद्या उपाधिवान ये, है अपरोक्ष उचारा । 3
आठों कटे गुरु गम साधन, कर सतसंग निराधारा । 4
'रामप्रकाश' काट मन संशय, तरंग तोय वत धारा । 5

भजन (57) राग—काफी छन्द डेढुआ

आठों धर्म ईश के खोलूं, ब्रह्मात्म इकसारा, समझे प्यारा।टेर
सर्वशक्ति पन एकपना दृढ़, व्यापक पन सुविचारा । 1
सर्वज्ञ है अरु स्वाधीन पन, समर्थ है सरदारा । 2
माया उपाधि परोक्ष आप सत, साक्षी ब्रह्म अपारा । 3
'रामप्रकाश' काट जीव ईश्वर, अपना कर दीदारा । 4

भजन (58) राग—सोरठ फकीरी पद

फकीरी ! या विधि तपस्या ताप ।
शूरा संत फकीरो तापे, कठिन विरह की भाप । टेर
ज्ञान गुफा प्रेमकर पलथी, आसन आसा धाप ।
नेजा नाम धर्म कर धामा, जाग्रत जोति अताप । 1
शील शिला साधन कर सुरका, पिण्ड पितर में नाप ।

साधन सिंहासन नियम का नारा, छत्तर सोहूं की छाप । 2 ।
श्रद्धा स्मरण सन चित आनन्द, चेतन देव अमाप ।
चित चेतन ब्रह्म व्यापक सोहं, दर्शें आपो आप । 3 ।
कष्ट कल्पना काट कंकाली, वर्जित विकार बिलाप ।
अचल अखण्ड अकर्ता आतम, लोरू जोर नहीं जाप । 4 ।
अनन्त अनादि निर्मला, भ्रान्ति नाहि रु बाप ।
'रामप्रकाश' फकर पा पूर्ण, उत्तमराम अनाप । 5 ।

भजन (59) राग—सोरठ पद फकीरी

फकीरी ! पढ़ना या विधि होंय ।
कागज पोथी पढ़े सब कोई, मरम न जाणे कोई । टेर ।
परा विद्या पढ़ पण्डित भूलो, भयो वाचाल विमोय ।
माया तृष्णा के बन्धन बाधा, मेल सके नहीं धोय । 1 ।
हरिगुण ज्ञान प्रेम पी प्याला, दुर्लभ पढ़ना सोय ।
कर्म कलेश कल्पना काटो, खट पट खटका खोय । 2 ।
मरहम माला अपरा साधन, निरमल हो निरमोय ।
वलन वासना वाणी शमकर, ज्ञानांयोग संग दोय । 3 ।
द्वैत दूर कर पाय निर्गुण को, सच्चिदानन्द समोय ।
'रामप्रकाश' ज्ञानी संत निर्भय, पाय अटल पद जोय । 4 ।

भजन (60) राग—सोरठ पद फकीरी

फकीरी ! रहणी कठिन करार ।
रहणी रहे शीश बिन शूरा, दम दम प्रति अपार । टेर ।
हरदम विरही की मस्त गस्त में, करन विवेक विचार ।

सतगुरु सोज खोज तन मांहि मिथ्या लखत संसार । 1
मृग तृष्णा जल पुरुष ठूंठ में, सत्या सत्य सुधार ।
सोहं ब्रह्म निर्गुण निज न्यारा. अपना रुप निहार । 2
मन का मणिया हरदम गणिया, छः सौ इक्कीस हजार।
साधन संग साधन को साधे. सहज समाधि सार । 3
मन कर तरता आप विचरता, संत सोई हुशियार ।
'रामप्रकाश' सच्चिदानंद लखता, ज्ञान फकीरी पद । 4

भजन (61) राग— सोरठ पद फकीरी

फकीरी ! जीवित मरण करार ।
गुरु साधन गम दुर्लभ सुलभ, श्रुति संत पुकार । टेर ।
दुर्लभ जीवत मरण जगत में, कठिण काम की मार ।
कठिण पंथ विरह को टेढो, कठिण फकीरी धार । 1
अग्नि पर सैंकण नवनीता, दुर्लभ नर सचियार ।
नीति नियम को कठिन पालना, महा कठिन उपकार । 2
क्रोध लोभ मत्सर मद माया, कठिन इन की टार ।
सतगुरु साधन संग का नियमा, कठिन निभावण सार । 3
उत्तम गुरु संतन की दाया, सहज सुलभ आगार ।
'रामप्रकाश' परमानन्द दाया. काटया द्वैत विकार । 4

भजन (62) राग—सोरठ पद फकीरी

फकीरी ! पार पहुंच्या घर ।
सतगुरु साचा मिले शिष साचा. निर्भय हो निस्तार ।टे
कथा गले गूदड़ी धीरज. बन्धन द्वैष विडार ।

द्वंद मिटाटा निज सुख पाया, ममता मोह को टार । 1 ।
फिकर मकर तकर को फाक्या, फकर सोई धनकार ।
ममता त्वंता अहंता को काटी, कर्म भ्रम कर छार । 2 ।
त्रिगुण ख्याति क्लेश रू भ्रांति, फकर देवे धिरकार ।
साधन संग जाण्या सत व्यापक, समदृष्टि ततसार । 3 ।
सदा अचिंता फक्कर अवधूता, निर्गुण ज्ञान विचार ।
'रामप्रकाश' परमानन्द झूले, अपनो पाय खुमार । 4 ।

भजन (63) राग—सोरठ पद फकीरी

फकीरी ! मौज सत की धार ।
संत मस्ताना ज्ञान मौज में दुर्गुण नाहि विकार । टेर ।
चार छहों रू नव अष्टादश, करता संत पुकार ।
छः दर्शन मत पंथ खोज के, लेनी सार विचार । 1 ।
विवेक वैराग्य षट् संपति मुमुक्षता, ले श्रवण मनण निरधार ।
निदिध्यासन गम तत त्वं शोधन, निश्चय साक्षात्कार । 2 ।
सारीं विकार संशय विडारो, आप होय सरदार ।
विषा चटको गर्ज सब पटकी, सोई फकर निस्तार । 3 ।
राव न रंका फकर महा बंका, सदा निशंक इकसार ।
'रामप्रकाश' उत्तम पद पाया, अनुभव की ललकार । 4 ।

भजन (108) राग—सोरठ पद फकीरी

फकीरी ! असल भया अवधूत ।
द्वैत गमाया द्वैष विलाया, लक्ष्या आप अनुभूत । टेर ।
आशा काद माया घर परकी, शीत उष्ण अनुरुत ।

टार वासना भया मस्ताना, मंदिर मसाण संभूत । 1 ।
धूल समाना त्रिगुण तंत सारा, खोया संशय भूत ।
मरजीवा हो विचरू जग में, तत्व चिंतन अनुसूत । 2 ।
निर्भय गस्ता पड़ा मन मस्ताना, पोषण प्रारब्ध पूत ।
भ्र मरु कर्म विक्षेप विलाया, जाण्या आतम पट सूत । 3
सतगुरु शब्द साधन गम सेती, पाया पद अनुकूत ।
'रामप्रकाश' परमानन्द केवल, ज्ञानी संत अवधूत । 4

भजन (65) राग—सोरठ पद फकीरी

फकीरी ! असल चढ़्या गिरनार ।
सतगुरु शरण साधन की संगत, पहुंच्या असल दुवार । टेर
जग बिन पंथ पेडी निन चढ़िया, लोक लाज की टार ।
गण गण तार लगी हरदम में, आवा गमन विडार । 1
कर पुरुषार्थ शम दम श्रद्धा, विवेक विचार वैराग ।
श्रवण मनण निदिध्यासन साध्य, सांच मुमुक्षता धार । 2
शील संतोष यम नियम धारणा, लीवी जरणा जार ।
नाम खुमारो विरह में मस्ता, आवा गमन विचार । 3
आशा तृष्णा एषणा हूं तूं, रही न द्वैत लिगार ।
ऊपर चढ़ता आगे बढ़ता, नहीं गिरता मझधार । 4
दशबे तारी हरदम भारी, छः सौ इक्कीस हजार ।
संशय कटया हटया यम फंदा, नहीं दर्दी दिलदार । 5
ज्ञान भूमिका सात पेढ़िया, दरशे नहीं दीदार ।
'रामप्रकाश' संत कोई लखता, मन वाणी गम हार । 6

भजन (66) राग:—सोरठ पद फकीरी

फकीरी ! लागो विरह तलवार ।
साधन रण में शूरा जूझे, संत महा सरदार । टेर ।
शब्द कटारी गुरु मारी, निकली आरो पार ।
सत संग तेगी धार उर बेगी, चढ़ी विरह मतवार । 1 ।
अन्तर आवर्ण छेदया सारा, एषया आस विसार ।
लागत हृदा कठया यम फंदा, तुरत हुआ भवपार । 2 ।
एक घाव से सब कुल मारिया, रहा ना द्वैत लिगार ।
भ्रम अज्ञान कर्म अघ मारिया, पाया आप दीदार । 3 ।
जग का खाण्डा दो खण्ड करता, द्वैत उपाधि डार ।
सत का खाण्डा जीव ईश दो, करता है इकसार । 4 ।
सहजे मारिया सो भव तारिया, मरण न दूजो वार ।
'रामप्रकाश' स्वरूप समाया, तोय तरंग इक धार । 5 ।

भजन (67) राग—राजेश्वरी हेली पद

हेली ए! निर्गुण ज्ञान विचार के, पाया पद गलतान ।टेर।
अकार उकार मकार ये, तीन ओम की तान ।
त्रिगुण में प्रपंच यह, तामें नहीं कल्यान । 1 ।
वैराट हिरण्यगर्भ सोंधले, ईश अव्याकृत भान ।
तत पद त्वं पद असीपद, सोहं बन्धन मान । 2 ।
विश्वे तेजस प्राज्ञ को, लीजे भेद सुजान ।
नो असत पद त्याग के, तीन एकसत आन । 3 ।
लय चिंतन को तत्व ले, अर्ध बिंदु साक्षी ज्ञान ।

'रामप्रकाश' अक्षय अचल, सदा आप निरवान । 5 ।

भजन (68) राग:—राजेश्वरी हेली पद

हेली ए ! ध्यान गम ऊपरे, मेरा निर्भय बोल । टेर ।
सुरत शब्द जड़ रूप है, निरत धारणा पोल ।
करणी कथ कथीर है, नहीं सांच रंच रोल । 1 ।
अगम निगम कथकथ थक्या, पायो नहीं कछु मोल ।
त्रिगुण रचना ऊपरे, मन वाणी नहीं डोल । 2 ।
द्वैत नहीं गया आय, साधक साधन गोल ।
निज बिन और न भासता, गुरु शिष्य नहि ओल । 3 ।
अपनो जप तप आप है, पाप पुण्य नहीं भोल ।
'रामप्रकाश' सत ज्ञानमय, अचल अखण्ड अतोल । 4 ।

भजन (69) राग—मंगल प्यारी पद

प्यारी ए ! अपना आप विचार, कर साधन को संग री ।
सतगुरु कृपा उर धार, आवर्ण कर भव भंगरी । 1 ।
निर्भय होय अडोल, तज माया मृग धूपरी ।
बोलो आद्द बोल, सोहं शुद्ध स्वरूपरी । 2 ।
परमानन्द अपार, चेतन अज निरवाणरी ।
दीखे सोई असार, सत असत यूं छाणरी । 3 ।
अचल अखण्ड है एक, मो बिन और न तंतरी ।
'रामप्रकाश, विवेक, आतम ब्रह्म अनंतरी । 4 ।

भजन (70) राग—मंगल प्यारी पद

प्यारी ए ! भटके मूजे अजाण, माया जाल पसार है ।

समझे संत सुजाण, निरवाणो, निरधार है। 1 ।
रज्जु में भासे नाग, सोपी भोडल सार है।
मृग तृष्णा जल थाग, यूं ही जाण संसार है। 2 ।
बन्ध विषय के माहि, मोक्ष भोग विसार है।
सतसंग गुरु गम पाहि, विरले पावे पार है। 3 ।
लोक लाज कुल कान, द्वंद दोष को टार है।
'रामप्रकाश' मस्तान, आपा लख्या अपार है। 4 ।

भजन (71) राग—मंगल प्यारी पद

प्यारी ए ! जाण्या जगत असार, रहणे को नाय है।
दृश्य बिलावण हार, मारा में आवे जाय है। 1 ।
नाना कलपना भांति, दोष द्वैत में गाय है।
नहीं पावे जन शांति, आवागमन में आय है। 2 ।
सतगुरु साधन संग, परमानन्द पाय है।
आवरण होवे भंग, व्यापक दरशाय है। 3 ।
निर्भय आप अडोल, अचल अगोचर राय है।
'रामप्रकाश' अतोल, मन वाणी विसराय है। 4 ।

भजन (72) राग—मंगल प्यारी पद

प्यारी ! खुल्या पूर्व का भाग खुल्या तकदीर है।
हरि गुरु महर अथाग, पायो संतन में सीर है। 1 ।
गुरुगम साधन संग, जागी विरह की पीर है।
जाण्या असत जग रंग, असल आई धीर है। 2 ।
जाग्या ज्ञान वैराग, गल कफनी को चीर है।

त्यागया द्वैत का मार्ग, पूर्ण भया फकीर है। 3।
हंस मत लीनो धार, तज्या असत जग नीर है।
'रामप्रकाश' अपार, लिया स्वरूप का खीर है। 4।

भजन (73) राग—मंगल प्यारी पद

प्यारी ए ! असल अगम की बात, सोई ततसार है।
और सकल उत्पात, लीजे ज्ञान विचार है। 1।

सतगुरु की गम सोज, ममता को मार है।
साधन संगत मौज, दुतिया टार है। 2।

अपना आपा खोय, लखो निस्तार है।
सोहं मरणा पोय, निज का कर दीदार है। 3।

अचल अभंगी रूप, आनन्द अपार है।
'रामप्रकाश' अनूप, आप अविकार है। 4।

भजन (74) राग—मंगल प्यारी पद

प्यारी ए ! निर्गुण जपिये राम. व्यापक सो आधार है।
त्याग जगत के काम. लखो ततसार है। 1।

घठ मठ एक अनूप. साधन को सार है।
रमता राम स्वरूप. लखे भव पार है। 2।

सब देवन को देव, नहीं त्रिगुण तार है।
अचल अभंगी सेव, द्वैत द्वंद को टार है। 3।

अपना आप सत सोय, नहीं बंध विस्तार है।
'रामप्रकाश' निरभोय, ज्ञान दीदार है। 4।

भजन (75) राग—मंगल प्यारी पद

प्यारी ए ! सतगुरु कहिये सोय, खोये भ्रम दोय रे।

निर्भय निशंका होय, हंसे नहीं राय रे। 1।
ज्ञान लखावे रूप, अनादि सोय रे।
अचल अखंड अनूप, और नहीं कोय रे। 2।
अज्ञान द्वैत भ्रम हान, नहीं उज्जवल नहीं धोय रे।
भूल भ्रान्ति अज्ञान, त्रिगुण की खोय रे। 3।
'रामप्रकाश' है एक, उलट कर जोय रे।
है रामप्रकाश विवेक, नहीं मिटे नहीं होय रे। 4।

भजन (76) राग—कान्हड़ा चोपाई पद

उलट स्वरूप आप को देखो, जनम मरण का टूटा लेखा। टेर।
गुरु की रमझ साधन संग पाया, सैन समझकर उलट समाया
त्रिगुण विकार अज्ञान विलाया,
भ्रांति संशय अध्यास मिटाया। 1।
पांच तीन का नहीं पसारा, जड़ जगत असत माया विस्तारा।
सीप में कागज भोडल रूपा, रज्जू में कल्पित सर्प स्वरुपा। 2।
नाना भाव छोटा अरु मोटा, मुझ में लाभ हाण नहीं टोटा।
मैं स्वयं आप अटल अमाया, परमानंद अनूपा अजाया। 3।
आप भूल नाना विधि तापा, उलटा देख पुण्य नहीं पाया।
'रामप्रकाश' सच्चिदानंद सोई, मो बिन और भासे नहीं कोई। 4।

भजन (77) राग—कान्हड़ा चोपाई पद

मेरा मुझ को कोटि प्रणामा,
मुझ बिन और न दीखे श्यामा। टेर।
वेद स्मृति मुझ को गावे, विधि निषेध विशेषण लावे।

नाना भांति कथा रस खोले, चारों वाणी भिन्न2 बोले । 1 ।
सत चित आनंद एक अपारा, परमानन्द घन केवल धारा ।
परम अनूप अखण्डा सोई, अचल अनन्त सो निरभोई । 2 ।
अटल अतोल अगोचर पूरा, सो अविनाशी आप हजूरा।
अकथ अमाप अजाप अनादि, छेदनभेदनहीं मूल प्रमादी ।3।
निज का निज और नहीं कोई, होय न मिटे मिटे नहीं होई ।
'रामप्रकाश' आप निरवाना, द्वैत बिना नितासो अधिष्ठाना ।4।

भजन (78) राग—कान्हड़ा पद चौपाई

सोजन उत्तम सो बड़भागी, निज का स्वरुप है अनुरागी ।टेर।
गुरु मुख सुगरा मोह से जागे, संशय भ्रमणा पब ही भागे।
वृति उलट आप में, लागे, अपना आप पिछाने सागे । 1 ।
अगम निगम का निर्णय आने, शस्त्रसार साधर संग जाने ।
प्रारब्ध भोग अन इच्छा माने, संचित ज्ञान अग्नि से छाने ।2।
द्वैत अद्वैत मिटा द्वंद दोई, अपना आप और नी कोई ।
ऐसा निश्चय अटल अनुभोई, सो सांचापद ले निरभोई।3
सांच में सांचा उलट समावे, सदा निशंका आन न भावे ।
'रामप्रकाश' मौन नहीं गावे, अचल अखंड सदा निरदावे ।4।

भजन (79) राग—कान्हड़ा पद चौपाई

आपा लखो आप निरवाना, परम पदार्थ निश्चय ठाना ।टेर।
संशय तर्क भर्म अज्ञाना, करो दुख लख सो निरवाना ।
काट विकार त्रिगुण की फांसी, आगे अचल आप अविनाशी।1
तोड़ भेद भाव पांच आकारा, सर्वातीत आप निरधारा ।

व्यापक पूर्ण सब इकसारा, शस्त्र में ज्यूं लोहा विचारा।1।
वाद न पाद कर्म नहीं काया, सच्चिदानंद अपार अजाया।
हस्ति इलम सरूर इसारा, अनलहक नूर निरधारा। 3।
सज्जन दुर्जन चर्म दृष्टि मांई, सम दृष्टि लख सो इकराई।
'रामप्रकाश' शुद्धात्म पूरा, पूर्ण चेतन आप हजूरा। 4।

भजन (80) राग—कान्हड़ा पद

ब्रह्म ज्ञानी सतगुरु समझावे, संशय रहित अभेद लखावे।टेर।
क्या ईश्वर का कारण कहिए? सो माया में अध्यस्त लहिये।
कहां ईश्वर का कहिये वासा ?
ईश्वर वास ब्रह्माण्ड निवासा। 1।
ईश्वर की हद कहां तक कहिये! सो ब्रह्म रुप लय हो रहिये।
ईश्वर स्वरूप शुद्ध क्या लहिये ?
आनन्द रूप सदा वो कहिये। 2।
कारण जगत का कहिये कैसा? सो भ्रांति अध्यास के जैसा।
कहां जगत का वासा जाना ?
यह सब बौद्धिक बुद्धि पिछाना। 3।
कहां तक जग की हद है पूरी। सो निज ज्ञान तक धार सबूरी।
जगत स्वरुप बखाने कैसा। सो तो अविद्यादिक पंच क्लेशा।4
धनगुरु उत्तर दिया ततसार, पाय परमानंद हो निस्तारा।
'रामप्रकाश' न संशय कोई, आप स्वरुप सदा सुख सोई। 5।

भजन (81) राग—कान्हड़ा पद

प्रश्न करुं मैं सतगुरु ज्ञानी,देहुं उत्तर लख शिष्य सुजानी। टेर

कारण जीव का कौन सा स्वामी ?

सो अविद्या को जान हूं नामी

कहां जीव का कहिये वासा? सो पिंड मांही करत निवासा।1।

कहां तक जीव की हद बखाने? हद तुरिया तक जीव सयाने।

जीव स्वरूप बखानो जोई? नाना रुप अनंत है सोई। 2।

कारण ज्ञान का कौन जु कहिये? सतगुरु ज्ञानी शरण लहिये।

कहां ज्ञान की जानूं वासा? सदा मनण कर शुद्ध अभ्यासा।3।

हद ज्ञान की कहां तक कहिये? इच्छा रयित अनिच्छा रहिये।

ज्ञान स्वरूप का कहां बिलासा ?

निज अपरोक्ष जु 'रामप्रकाश'। 4।

भजन (82) राग—कान्हड़ा पद

सतगुरु अरजी सुन लो मोरी, शंका काटो भ्रम को तोरी टेर।

ईश्वर का स्वरुप है कैसा, वाच्य स्वरुप लछूं मैं जैसा।

लक्ष्य स्वरुप ईश्वर का जानूं, अपना आप सत्य पहिचानूं।1।

कृपा करो गुरु शरण तिहारी, मैं मूरख मति होन अनारी।

भूला अनंत जनम का प्राणी, मैं क्या जानूं सो निरवाणी।2।

जाको संत बखाने पूरा, गुरु मुख ज्ञानी जाने शूरा।

'रामप्रकाश' और नहिं कोई, कैसे लान सकू में सोई। 3।

भजन (83) राग—कान्हड़ा

सतगुरु निर्भय उत्तर खोले, सुन ले जिज्ञासू मन में तोले।टेर।

शुद्ध सतोगुण माया कहिये, माया अधिष्ठान ब्रह्म जो रहिये।

चित प्रतिबिंब रुप चिदाभासा, यह तीनों मिल ईश्वर भासा।1।

तीन शरीर अवस्था तीनों, पांच कोश काल वस्तु चीनो ।
देश धर्म, वस्तु अभिमानी, वाच्य स्वरूप ईश का ज्ञानी।2।
वाच्य स्वरुप सामग्री त्यागो, शुद्ध सतो, गुणी माया नागो ।
औ माया प्रतिबिम्ब भाग को छोड़ो,
शुद्ध अधिष्ठान लक्ष्य में जोड़ो । 3 ।
ऐसा स्वरुप ईश्वर का जानो, लक्ष्य रुप में भेद न आनो ।
सो ब्रह्म आप विलय दृढ़ रुपा, निश्चय एक अद्वैत स्वरुपा ।4।
सतगुरु साधन संगत कीजे, प्रमेय रू प्रमाण संशय गति छीजे।
लक्ष्य अपरोक्ष दृढ़ शुद्ध ज्ञाना, 'रामप्रकाश' आप कल्याना।5।

भजन (84) राग—कान्हड़ा पद

ईश्वर वाक्य स्वरुप पद्म खाबो, कर कृपा गुरु भेद बताओ।टेर
समष्टी जीवन का होंय शरीरा,
तब ईश्वर का तन होत गंभीरा ।
वैराट हिरण्य गर्भ अव्याकृत जानो, तीन वपू ईश्वर के मानो।1
समष्टी जीवन के पांचों कोशा,
सो मिल व्यष्ठि ईश्वर का कोशा ।
उत्पति स्थिति प्रलय संसारा, ईश्वर अवस्था भेद विचारा ।2
वैश्वानर सूत्रात्म अन्तर्यामी, तीन देव अभिमानी गामी ।
शुद्ध सतोगुणी माया देशा, तीनों गुण सो वस्तु अशेषा ।3
विश्व उत्पति स्थिति लय होई, ईश्वर काल कहिये सोई ।
सृष्टि नियम चलावे नाना, यह ईश्वर का कार्य बखाना ।4
एक परोक्ष समर्थओ व्यापक. सर्वज्ञसर्वशक्ति स्वाधीनव्यापक।

माया उपाविधान विचारा, यह आठों धर्म ईश्वर का धारा।5।
यह सब होवत वाच्य स्वरूपा इन के त्याग सोई लक्ष रूपा।
'रामप्रकाश' पिछानो सोई, अपना आप और नहीं कोई।6।

भजन (85) राग—छन्द भेरवी पद

सतगुरु से गुरु गम पायके, निज पाया पद निरवाना।टेर।
अनंत युगों का सूता जाग्या, जगत जाल से उठकर भाग्या।
भाव उलट साधन संग लाग्या, तज योग भोग दुखदाय के।
निज पाया ज्ञान दिवाना।1। त्रिगुण फंदा निर्भय तोड़ा।
जीवात्मा को निज में जोड़ा, चौरासी का काटया फोड़ा।
जनम रू मरण मिटाय के, निज हुआ असल मस्ताना।2।
फिकर फाक के लीवी फकीरी, परमानन्द को पाय जागीरी।
फूल फकर की बेहद नजीरा, सब हूं तूं द्वैत विलाय के।
निज आप मांही गलताना।3। जीव ईश का काटया शंका।
अगम निगम पर लागा डंका, सदा निशंका महारण बंका।
संत 'रामप्रकाश' समाय के, निज बूंद में सिंधु उलटाना।4।

भजन 86 राग—छन्द भैरवी पद

धन फूल फकोरी पायके, मैं फकर हुआ मस्ताना। टेर।
गुरु गम सतसंग साधन भीना, भक्ति युक्ति का संगग चीना।
मार्ग शोधन संतन का लीना, सब जग से मोह हटाय के।
निज पाया केवल ज्ञान।1। गुरु गम सार शास्त्र की जानी
दोष भेद का नाश निदानी, परम निजानंद मुक्ति ठानी।
सत महा वाक्य उर लायके, निज एक यथार्थ जाना।2।

पूर्वभाग पुरुषार्थ जाग्या, सतगुरु संग में मनवा लाग्या।
भ्रम कर्म संशय सब भाग्या, सत आतम दरशाय के।
कछु द्वैत रहा नहीं दाना ।3। उत्तमराम गुरु दीना डंका।
सोई रामप्रकाश निशंका, अपना आप सीधा नहीं बंका।
सत केवल पूर्ण थाय के, निज मस्ती में गलताना । 4 ।

भजन (87) राग—छन्द भैरवी पद

अब उत्तम फकीरी पाप के, लिया उत्तम गुरु का शरणा।टेर।
ब्रह्म निष्ठी ब्रह्म श्रोत्रिय पूरा, ज्ञान योग दृढ़ शूरन शूरा।
पूरण ब्रह्म लखा भरपूरा, महावाक्य फरमाय के।
हर द्वंद जनम अरु मरणा ।1। उत्तम साधन सतसंग कीनी।
समझ समझ संतन की लीनी, कर पुरुषार्थ युक्ति चीनी।
सब जग से मोह हटाय के, अब रहा नही कछु करणा ।2।
त्रिगुण विकार दोष सब झाड़या, कर्म भ्रम का मूल उखाड़या।
धर्मराय का कागज फाड़या, डंका निर्भय लाय के।
अब लेखा कछु भरणा ।3। अचलराम गुरु निर्भय निशंका
उत्तमराम का बाजत डंका, रामप्रकाश फकर महा दंका।
सब में तूं मूल मिटाय के, नही जप तप कोई सिमरणा ।4।

भजन (88) राग—छन्द भैरवी पद

निज सदा आप अधिकार हूं, निज निज को अपना दृढ़ाना ।टेर
मैं तूं मूल माया नही मण्डी, ज्ञान अज्ञान गृही नहीं दण्डी।
पिण्ड ब्रह्म कछु ब्रह्मण्डी, सत पूरण ब्रह्म अपार हूं।
नही बंध मुक्त का स्याना ।1। जीव ईश का नाही रेशा।

तीन शरीर न पांच कलेशा, संकल्प विकल्प का नहीं लेशा-1
निज पूरण सो निराकार हूं, संत सच्चिदानंद निरवाना ।2।
द्वैत-अद्वैत भ्रम सब टूटा, खोया|पाया नहीं कछ लूटा ।
ना कछु खूटा नाहिं अखूटा, मैं मन वाणी के पार हूं ।
निज परमानंद कल्याना ।3। त्रिगुण सगुण ते निगुण नागा।
नहीं कछु पास नही को थागा, दूर नहीं थिर अथिर अथागा।
तत 'रामप्रकाश विचार हूं, निज ज्ञान रूप अधिष्ठाना ।4

भजन (89) राग—छन्द भैरवी पद

निज साक्षी रूप अपार है, सत एक अद्वैत विचारा ।टेर
सदा अयोनी अखण्ड अकरता, सदा अजन्मा और अमरता
घटे बढ़े नहीं सदा अजरता, निज अनन्य निराधार है ।
अविनाशी अचल सुधारा ।1। एकदोय कछु कहा न जावे
और न दूजा कहां समावे, मन वाणी की गति विलावे ।
निज परमानंद अविकार है, नहीं त्रिगुण माया का चारा।2
संशय भ्रम कलेश न कोई : अनुभव निभय की गति खोई
अटल अजाया सत चित सोई, नित आनंद का आधार है
सत व्यापक घन उचारा ।3। रामप्रकाश सोई अधिष्ठाना
रामप्रकाश न ज्ञान अज्ञाना, गुरु शिष्य क्रिया गया न आना
सो रामप्रकाश विचार है, नहीं ज्योति ज्योत अंधारा ।4

भजन (90) राग—छन्द भैरवी पद

गुरु एसा करले जोय रे, सन प्रश्न-उत्तर समझावे । टेर
क्या ईश्वर का कारण कहिये क्या कारण ते जीव हों रहिये

कारण कौन जगत का लहिये, क्या कारण ज्ञान का होयरे।
कर भिन्न-भिन्न उत्तर गावे । 1 ।

कारण ईश्वर का कहिये माया।
अविद्या कारण जीव कहाया, भ्रांति कारण जग भ्रमाया।
ब्रह्म ज्ञानी सतगुरु सोय रे, सो ज्ञान को कारण कहावे ।2।
कहा ईश्वर का वासा जानो, कहां जीव का बास पिछानो।
जग का वासा कहां बखानो, कहां वास ज्ञान का पोय रे।
यह संशय भ्रम मिटावे ।3। ब्रह्माण्ड में ईश्वर का वासा।
जीव पिण्ड में करत निवासा, जग का वासा बुद्धि विलासा।
ज्ञान अभ्यास की लोय रे, संत 'रामप्रकाश' बतावे । 4 ।

भजन (91) राग —छन्द भैरवी पद

ब्रह्मज्ञानी सतगुरु होय रे, तब निश्चल पद को पावे । टेर।
कहां तक हद ईश्वर को कहिये,
कहां तक हद जीवातम लहिये।
कहां तक जग की हद जो सहिये, कहां ज्ञान
हद जोय रे, गुरु-खोल अर्थ समझावे ।1।
ब्रह्म तक हद ईश्वर की गावे, तुरिया तक हद जीव रहावे।
जग को हद सो ज्ञान समावे. इच्छा दे सब खोय रे।
सो ज्ञान की हद कहावे । 2 ।
क्या ईश्वर का जान स्वरूपा, जीव स्वरूपा सो कौन अनूपा।
कौन स्वरूप जगत का रूप, क्या रूप ज्ञान का लोय रे।
सब भिन्न-भिन्न भेद बतावे । 3 ।

ईश्वर रूप आनन्द समाना, जीव स्वरूप अनन्त बखाना।
जगत स्वरूप कलेश महाना, निज ज्ञान अपरोक्षो सोय रे।
संत रामप्रकाश विलावे। 4।

भजन (92) राग—छन्द भैरवी पद

सो पांच कलेश मिटाय के, लख ब्रह्म एक ततसारा। टेर।
अविद्या अस्मिता राग रूद्वेषा, पचम जानो अभिनिवेशा।
कारण कार्य लख पांच कलेशा, जग नाना जाल फैलाय के।
भ्रमरूप बंधा संसारा। 1। अनात्म को आत्म जाने।
अनित को नित भूला शाने, अशुचि में शुचि भ्रमाते ठाने।
बुद्धि दुःख में सुख जंचाय के, सो अविद्या कार्य पुकारा।2।
शुद्ध चेतन के आश्रित रहती, ताको उलट आवृत कर लहती।
सो मूला अविद्या फल कहती, दो कार्य कारण कहलाय के।
वह अविद्या विक्षेप विचारा। 3।
सो अस्मिता शुक्ष्म अहंकारा, अन्योन्याभाव तादात्म्य धारा।
आशक्ति रात भोगादिक लारा, क्रोध द्वेष दरशाय के।
अभिनिवेश मरण भय धारा। 4।
यह पांचों मुक्त में नही कोई, दृढ़बुद्धि साधन त्याग संजोई।
भूल भ्रम भ्रान्ति सब खोई, लख अपना रूप अचाय के।
शुद्ध 'रामप्रकाश' अपारा। 5।

भजन (93) राग—छन्द भैरवी पद

लख भाषा ज्ञान वेदांतकी, गुरु ज्ञानी ज्ञान लखावे। टेर।
व्यावर्तक उपलक्षक जानो, परिच्छेक विशेषण मानो।
चारों नाम एक कर गानो उपाधि भ्रान्त की।

जड़ भात अंतःकरण गावे ।1। व्यावर्त्य उपलक्ष्य बखाना ।
परिच्छेद्य विशेष्य आना, चारों का भेद है सुजाना ।
सो अन्तःकरण साक्षी शान्त की, शुद्ध चेतन रूप दृढ़ावे ।2।
उपलक्षक उपलक्ष्य सोई, सात्विक अंतःकरण या विधि दोई।
ता जड़ भाग को तजदे धोई, ले साक्षी जेतन शान्त की ।
दुःख संशय भेद विलावे । 3 । वस्तु चेतन सो पहिचानो ।
जान अवस्तु जड़ तज मानो, अपना रुप दृढ़ निश्चय आनो ।
ले गति मति मूल वेदांत की, सुख 'रामप्रकाश' समावे ।4।

भजन (71) राग—छन्द भैरवी पद

मन्दिर में मूरति चार है, पर देव है एक है भाई । टेर ।
अंतःकरण अविच्छन्न प्रमाता, वृति अविच्छिन्न प्रमाण सुहाता
वस्तु आकार लय प्रमेय विधाता, यह तीन उपाधि धार है।
निज प्रमा चेतन सुखदाई।1। तन मंदिर है अजब निराला।
चारों सूरत अन्तःकरण आला, एक मूरत साक्षी गोपाला ।
सब और उपाधि डार है, तब एक देव दरशाई । 2 ।
मन्दिर में ठाकुर है चारों, तीन उपाधि भेद विडारो ।
हौज नाली क्यारी सम धारो, निज साक्षी जल धार हैं ।
सत दृष्टा सबका पाई । 3 । नाना उपाधि भेद विलावो ।
अधिष्ठान का पद सत पावो, उलटा अपने मांहि समावो ।
नहीं द्वैत न और विकार है, है रामप्रकाश अथाई । 4 ।

भजन (95) राग—छन्द भैरवी पद

मैं साक्षी बैठा आय के, रथ मेरा एक निराला । टेर ।

पांचों तंत रथ देखो कैसा, प्राण पांच वाहन भो वैसा।
सेवक पांच कर्मेन्द्रिय जैसा, सब साज समाज जचाय के।
रथ सुख दुःख ऊपर चाला।1। पांच ज्ञानेन्द्रिय बने दरवाजे।
पांचों विषय भाग है ताजे, लोक परलोक के देख निवाजे।
आवागमन में धाय के, खुद आप हुआ मतवाला।2।
अंतःकरण है आसन मेरा, कर्ता भोक्ता सांझ सवेरा।
दृष्टा रूप लगाया डेरा, निज कर्म वासना लाय के।
घर अविद्या मांही घाला।3। मैं दृष्टा इन अष्ट पुरी का।
जीव रूप हो धार धुरि का, जन्म मरण की तार तुरीका।
सब भ्रांति अभ्यास जमाय के हूं रामप्रकाश अकाला।4।

भजन (96) राग—छन्द भैरवी पद

निजज्ञान भूमिका बोधले, गुरु क्रम से उलट समावो ।।टेर।।
पूर्व संचित शुद्ध अभ्यासा, साधन चार उर होय जियासा।
सतगुरु शरणे धार उपासा, शुभ इच्छा भूमिका रोधले।
तब युक्ति मार्ग जीवो।1। श्रवण गुरु की वाणी कीजे।
भेद बाधक वृत को छीजे, अभेद साधक युक्ति को लीजे।
कर मनन सुविचारण गोधले, गम रमझ समझ दरशावो।2।
मन के द्वारा होय अभ्यासा, ब्रह्म स्थिति होय निदिध्यासा।
व्यवधान रहित परिपक्क उपासा, तनुमानस भूमि जोधले।
निज अनुभव उक्ति लावो।3। प्रमेय प्रमाणगत संशय तोड़ो।
विपरीत भावना दोष जु छोड़ो, शुद्ध स्वरूप में वृति जोड़ो।
है सत्वा पति का पौधले, निज आनंद पाय उमावो।4।

अहंता ममता त्वंता टारे, अखण्ड समाधि ज्ञान विचारे।
अंश शक्ति सो ताहि उचारे, परमानन्द को शोधले।
भव काट चौरासी दाओ।5। दृढ अपरोक्ष सदा ब्रह्मज्ञाना।
असत अकार वृति भ्रम भाना, निज गलताना सो मस्ताना।
पदार्थ अभावनि बोध ले। द्वद द्वैत उपाधि विलावो।6।
हूंतं द्वैत अद्वैत न होई, सुर्गुण निर्गुण भासे नहीं कोई।
रामप्रकाश तुरिया तत सोई, निज रामप्रकाश सुमोधले।
मन वाणी से नहीं गावो। 7।

भजन (97) राग—छन्द भैरवी पद

निज अपना आप ही आप है,नहीं और किसी का धरना।टेर।
देवदानव को नाहीं पूजा, मो बिन और नहीं कोई दूजा।
देवल देव आप सब सूजा, नहीं कर्ता अकर्ता नाप है।
नहीं जनम और नहीं मरना।1। छोटा मोटा कहा न जावे।
दोय एक का भेद विलावे, ईश्वर जीव माया नहीं गावे।
नहीं पुण्य नहीं कछु पाप है, नही डूबे जले नही तरना।2।
ख्याति भ्रांति नही अध्यासा, भूल भ्रम का नाही राशा।
तत्व अज्ञान माया नही खासा, नही और किसी का जाप है
नही लेखा किसको भरना।3। अटल अयोनी अखण्ड अकर्ता
अचल अनामी आप अमरता, रामप्रकाश अनूप अजरता।
नही त्रिगुण निर्गुण की छाप है, निज सच्चिदानंद अकरना।

भजन (98) राग

मैं एक अबाणी रुप, हूं सत व्याप रह्योघन घन हूं।टेर।

वाद विवाद कह्या नही कोई, पठन लिखन मन वाणी खोई।
सदा अखण्डी सो निरभोई, नही द्वैत भ्रम का कूप हूं ।
निज पूर्ण सब जन जन हूं ।1। परमानन्द अनूप अयोनी ।
आप अकर्ता अटल अगौणी, गूंगा वाचक नही मौनो ।
नही थूल सूक्ष्म के रूप हूं, गुण हीन सदा मन मन हूं ।2।
भेद भ्रम ख्याति अधियासा, मुझ में नाही कब अभ्यासा।
नही अपवाद आरोप विलासा, भाव अभाव न जूप हूं ।
निज दृश्य नही तन मन हूं । 3 ।

सगुण निर्गुण में एकन न कोई ।

आप आप का निज अनुभोई, रामप्रकाश आप सत सोई ।
नही कोई वाणी चूप हूं, निज अटल अचल कन कन हूं ।

भजन (99) राग—छन्द भैरवी पद

लक्ष चौथे पद का पाय के, कर निश्चय समझ विचारो।टेर।
चौदह इन्द्रिय अध्यातम भाखे, तिनके देव अधिदेव सुराखे ।
चौदह विषय अभिभूत जु चाखे, यह तत्व बयालिस थाय के ।
कर जाग्रत अवस्था धारा ।1। स्थूल भोग रजोगुण जाना ।
विश्व जीव ब्रह्म देव बखाना, क्रिया शक्ति नैत्र स्थाना ।
मुख वाणी वैखरी दाय के, सब जाग्रत मांहि पसारा । 2 ।
जाग्रत पलट स्वप्न जब होई, जीव कृत रचना सब कोई ।
सूक्ष्म भोग सतोगुण जोई, तेजस जीव कण्ठ गाय के ।
सत विष्णु देव उचारा । 3 । शक्ति ज्ञान मध्यमा बाणी ।
हाय अन्तचोकृत परमाणी, स्वप्न अवस्था खेल खिलाणी ।

तब नाना भाव दरशाय के, सब खेल करे संकारा । 4 ।
जाग्रत स्वप्न दोनों लय होई, जान सुषोप्ति अवस्था सोई ।
जगत-त्रिपूटी भास न कोई, भ्रम आवर्ण पर्दा आय के ।
सुख अनुभव करत उदारा ।5। आनंद भोग तमोगुण पूरा ।
प्राज्ञ जीव शिव देव हजूरा, दिव्य शक्ति हृदय में नूरा ।
निज वाणी पश्यंति चाय के, यह सुषोप्ति भेद निहारा ।6।
तीन अवस्था का मैं लखता, परा दृष्टा तुरिये तत सुखता ।
सीपी में भोडल ज्यूं दिखता, त्यों हूं तूं दोई विलाय के ।
सत 'रामप्रकाश' विचारा । 7 ।

भजन (100) राग – छन्द भैरवी पद

मैं तुरिया अतीत अपार हूं, सत चेतन आनन्द सोई । टेर ।
नहीं कछु खोया नाहीं पाया, रहया गया वो नहीं कछु आया
तोय तरंग वत सिंधु समाया, मैं बन्ध मुक्त से बार हूं ।
मन वाणी की गम खोई ।1। नहीं मैं जन्मूं नहीं मैं मरता ।
प्रकट गुप्त मैं कहीं नहीं छिपता, भवसागर में डूब न तरता ।
नहीं शेष अशेष आधार हूं, निज अचल अखंड निरभोई ।2।
त्रिगुण हीन मैं हूं निरवाणी, सदा अयानी नाहीं साणी ।
एक दोप का नहीं प्रमाणी, निज तुरिया तीत विचार हूं ।
निज 2 का निज अनुभोई।3। पण्डित मूरख नही परवीना ।
वाचयार्थ लक्ष्यार्थ हीना, जीव ईश माया नही तीना ।
ब्रह्म 'रामप्रकाश' उदार हूं, घन द्वैत-हीन निरमोई । 4 ।

भजन 101) राग—छन्द भैरवी पद

निज ओम सोहं मन लाके, नित रमता राम उचारा ।टेर।
जान अकार मकार उकारा, रजो सतो तम त्रिगुण धारा।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र अघारा, अर्ध बिन्दु साक्षी थाय के।
जग ओम भयो विस्तारा ।1। त्वं पद जीव वाच्यार्थ जाना।
तत पद ईश वाच्यार्थ गाना, त्वं तत असि लक्ष्यार्थ छाना।
निज लय चिंतन को पाय के, रट सोहं हंस उदारा । 2 ।
रकार अग्नि गुण जानो भाई, अकार रवि गुण कला सदाई।
चण्द्र मकार कला गुण दाई, मिल राम भया सुखदाय के।
रट एक जाण रणंकारा ।3। अटल अद्वितीय आप अपारा।
नाम रूप त्रिगुण से न्यारा, 'रामप्रकाश' अखण्डी प्यारा।
निज उलटा आप समाय के, नही बंध मुक्त निस्तारा। 4 ।

भजन (102) राग—छन्द भेरवी पद

पद परमानन्द परसाय के, निज उलटा आप समाया ।टेर।
पांच तीन प्रपंच विलाया, भ्रांति संशय भेद मिटाया।
जीव ईश का लक्ष्य मिलाया, निज एक कुटस्थ दरसाय के
द्वंद्व द्वैत उपाधि ढाया । 1 । मैं तूं हम तुम एक न कोई।
बंधन मुक्त एक नहीं होई, अटल अगोचर आतम सोई।
निज अखण्ड अयोनी थाय के, मन वाणी खोज विलाया।2।
जप तप क्रिया अवर्ण नहीं आना,
कारण कार्य का नहीं अज्ञाना।
अनंत अबाणी सो निरवाना, निज अविनाशी दाय के।

उहीं जनम मरण में आया ।3। रामप्रकाश गुरु नही चेला ।
सदा अकेला संग न भेला, उत्तम रामप्रकाश सुबेला ।
निज अधिष्ठान ठहराय के, नही बने मिटे नही माया ।4।

भजन (103) राग—छन्द भैरवी पद

सत चेतन आनंद ज्ञान में, गुरु गम से उलट समाना । टेर ।
पांच प्रपंच का नहीं पसारा, त्रिगुण माया नहीं विस्तारा ।
तोय तरंग का खेल सुधारा, त्यों ब्रह्म स्वयं ब्रह्मज्ञान में ।
द्वंत हूं तूं द्वैत विलाना ।1। नाना खिलौना खाण्ड पसारा ।
शस्त्र में ज्यूं लोहा धारा, भूषण हाटक एक विचारा ।
त्यों कार्य कारण की शान में, मध्य द्वैत उपाधी ठाना ।2।
निमित कारण की नाही माया, उपादान कारण नही काया ।
भ्रम अध्यस्त में जो भरमाया, सो अपनी भूल ॐ ज्ञान में ।
पर बंध मुक्त नही म्याना ।3। उत्तमराम का बाजत डंका ।
'रामप्रकाश' उत्तर नहीं शंका, आप अगोचर सदा निशंका।
नही पहुंचे वाणी बखान में, मैं साक्षी अधिष्ठाना । 4 ।

भजन (104) राग—छन्द भैरवी पद

मैं व्यापक हूं संसार में, नही एक जगह पर ठाना । टेर ।
गया काशी मथुरा हरिद्वार, वहां पर मेरा नही दीदारा ।
षट् चक्र मैं प्राण सुधारा, नही वासा दसवें द्वार में ।
में अचल अखण्ड निरवाना । 1 ।
काजी पण्डित लख नही सकता ।
वाणी वेद ग्रंथ नही बकता, योगी भोगी नही कछु लखता ।

मैं कन कन के आधार में, घन पूर्ण आप कल्याना । 2 ।
बाहिर भीतर पास रु दूरा, राव रंक अज चिण्टी हजूरा ।
मैं घट मठ मांहि हूं भरपूरा, नही संशय भ्रांति विकार में ।
मैं जीव ईश अधिष्ठाना ।3। सुगुण त्रिगुण का रुप बनाया ।
थूल सूक्ष्म कारण ठहराया, निर्गुण का सब परचा पाया ।
सत तोय तरंग सिंधु धार में, चित 'रामप्रकाश' सयाना ।4।

भजन (105) राग—छन्द भैरवी पद

निज अपना आप विचार के, गुरु गम से उलट समाना।टेर।
जीव ईश माया ब्रह्म कोई, वाच्यार्थ लक्ष्यार्थ दोई ।
मूल उपाधि सब की खोई, दो माया अविद्या टार के ।
निज अपना आप पिछाना । 1 ।
पिण्ड ब्रह्मण्ड का नाही लेखा ।
आदि अनादि नाही पेखा, उत्पत्ति पाल प्रलय नहीं देखा ।
सब द्वैत उपाधि विडार के, ज्यों सिंधु तरंग विहाना । 2 ।
चारों वाणी चारों खाणी, नाम रूप सब सहज विलाणी ।
निज निरवाणी आव अबाणी, जड़ चेतन दोऊ उजार के ।
सब दृष्टा दृश्य विलाना ।3। ज्ञान ध्यान की नहीं त्रिपुटी ।
ग्रहण त्याग उपाधि छूटी, नहीं कोई बनी नही कछु फूट ।
निज 'रामप्रकाश' अपार के, जो था सोई ठहराना । 4 ।

भजन (106) राग—कल्याण पद मनोहर

संतन की चाल एक, सदा निराधार जो । टेर ।
निष्ठा लखो नित, परम अमित गत ।

असंग अचल रत, व्यापक विचार जो । 1 ।
घट मठ नाना जाप, रह्यो निज ब्रह्म व्याप ।
चेतन आनन्द आप, अनन्त अपार जो । 2 ।
मायातीत निराकार, सदा सुख रूप सार ।
द्वैत न आधार मार, नित निर्विकार जो । 3 ।
कल्यान स्वरूप ज्ञान, सत रूप अधिष्ठान ।
संत 'रामप्रकाश' ये, निष्ठान निज सार जो । 4 ।

भजन (108) राग—कल्याण पद दादरा

अपना आप जाने सोई, भेद भ्रम ढावे हैं । टेर ।
यह जग झूंठ भास त्रिगुण माया की खास ।
भ्रान्ति जान अधियास जीव जो कहावे है । 1 ।
रज्जू सर्प ठूंठ पुरुष, सीपा में भोड़ल चांदी ।
मृग तृष्णा जल ज्ञान, जाने ते विलावे है । 2 ।
संतन अद्वैत मत, ग्रंथन में गाय सत ।
शंकर अरु व्यास गत, प्रमाण बतावे है । 3 ।
गीता ब्रह्म सूत्र गाय, अचल अखण्ड पाय ।
* 'राघव प्रसाद' ज्ञानी, निश्चय उर पावे है । 4 ।

भजन (109) राग—कल्याण पद कवित

दोय मत ठाने भूल, एक ही अमन्त है । टेर ।
खाकी वादी आतसीना, आब नूर अनासर ।
वायु तेज पृथ्वी ना, जल नभ तंत है । 1 ।

*रचयिता—'रामप्रकाश' का उपनाम 'राघव प्रसाद' है ।

बसरी मलकी हक्की जान, वजूद जो तीन मान ।
थूल सूक्ष्म कारण ना, मोमे नहिं पन्त है । 2 ।
रूह जीव मिथ्या खाक, जान दृश्य रज्जू सर्प ।
मृषा सीप रजत ज्यूं, भ्रम हान संत है । 2 ।
इल्म सरूर हस्ति, आनन्द रू चित सत ।
निज 'रामप्रकाश' हूं, अचल अनन्तर है । 4 ।

भजन (109) राग—कल्याण पद कवित

मेरी मुझे निष्ठा हक्क, एक अधिष्ठान ये । टेर ।
एक चिदानन्द सत, अचल अखण्ड निज ।
अनव्य अविनाशी एक, आतम ब्रह्मज्ञान ये । 1 ।
हस्ति इलम नूर, अचल सरूर पूर ।
अनल हक्क निरंजन, रूप मेरो जान ये । 2 ।
जहूर इलफ इक, अस्ति भांति प्रिय निज ।
अनन्त अपार घन, पुकार मस्तान ये । 3 ।
संत 'रामप्रकाश' ये, सीपी मध्ये भोडल ज्यूं ।
रज्जू सर्प मृग तृष्णा, दृश्य भ्रम भान ये । 4 ।

भजन (110) राग—कल्याण पद

शुद्ध है स्वरूप मेरा, अभय अविनाशी है । टेर ।
अधिष्ठान एक ब्रह्म, मैं तूं नाहि रञ्च भ्रम ।
क्रिया लोक नांही कर्म, सत चिदानन्द है । 1 ।
अनल हक्क हस्ति ज्ञान, इल्म सरूर मान ।

स्वर्ग नर्क दोऊ हान, एक परमानन्द है । 2 ।
अनन्य रू सुखधाम, साक्षात उत्तमराम ।
अचल अखण्ड आम, पर ब्रह्मानन्द है । 3 ।
अप्रोक्ष विज्ञान एक, अनन्त अपार लेक ।
संत 'रामप्रकाश' में, एक नाहीं फंद है । 4 ।

भजन (111) राग – कल्याण पद

मूढ मरे ज्ञान बिना, सहे कष्ट आप है । टेर ।
पांच मुद्रा साधे कोई, आसन लगावे कोई ।
गुफा को खोदावे कोई, जपे मंत्र जाप है । 1 ।
कुम्भक में श्वासा मार, पूरक रेचक सार ।
त्राटक साधत कष्ट, दम्भ का प्रताप है । 2 ।
योग भोम क्रिया तंत्र, मसान जगावे यंत्र ।
नाद बिंदु ठाने मंत्र, मिटे नहीं पाप है । 3 ।
आतमज्ञानी गुरु बिना, ब्रह्मज्ञान होत नांही ।
'राघव प्रसाद' बिना, मिटे नहीं ताप है । 4 ।

भजन (112) राग—कल्याण पद

वासना के मिटे बिना, नहो निस्तार है । टेर ।
चाहे जप तप करो, व्रत दान काशी मरो ।
गयाद्वि अनेक धरो, ध्यान कथा सार है । 1 ।
विद्याज्ञान शील धीर, माया पति वीर म र ।
रूप गुण त्याग जग, सुत बित नार है । 2 ।
कान मूंदे चक्षू रुंधे, आसन रु प्राणायाम ।

ग्रंथ षट् अष्टादश, पढ़े नव चार है । 3 ।
बिना गुरु ज्ञान नाही, लक्ष्य बिना थाह नाही ।
बिना 'रामप्रकाश' के, जावे यम द्वार है । 4 ।

भजन (113) राग—कल्याण पद

फकीरी के सांग भाई, फकीरी ना पावेगा । टेर ।
भगवां वसन पाय, वैरागण कर लाय ।
नखन बढावे कोई, शीश को मूडावेगा । 1 ।
याचना ते भरे पेट, मूडे शिष्य हरे धन ।
छल चतुराई करे जगत रिझावेगा । 2 ।
ज्ञान की लबार कर, नारी घर मन रमे ।
धिकार लजाय भेष, नर्क में सिधावेगा । 3 ।
मनाका फकर कर, फिकर का फाका फाक ।
सन्त 'रामप्रकाश' यूं, फकर हो जावेगा । 4 ।

भजन (114) राग—कल्याण पद

भक्ति को जो चाहो प्यारे, शरण मेरी आय लो । टेर ।
बन्धन विडारुं जग, मोक्ष को सुधारुं मग ।
शब्द को सुनाऊं कान, हृदय ठहराय लो । 1 ।
विकार पसार टार, व्यशन रु दोष हार ।
आवे शरण करुं पार, भ्रम को मिटायलो । 2 ।
जीव ईश फन्द त्याग, माया ब्रह्म भेद थाग ।
जनम मरण जाग, कष्य को हटाय लो । 3 ।
उपदेश प्रकट सार, संत 'रामप्रकाश' ये ।

निर्गुण को शब्द धार, चित ठहराय लो । 4 ।

भजन (115) राग—कल्याण पद

मेरे बिना और नाहीं, भासे कोई देव है । टेर ।

माया रूप कार्य जेते, कारण स्वरूप तेते ।
अखण्ड अनूप वेते, ब्रह्म आप जेव है । 1 ।

व्यापक निर्गुण सार, मिश्री में मिठास चार ।
मेंहदी में रंग प्यार, शस्त्र लोह लेब है । 2 ।

भूषण में कनक जो, मिर्ची में चरकान जो ।
अनन्य अथाह सजो, मन वाणी नेब है । 3 ।

गति मति सब थाकी, सबको दृष्टा है बाकी ।
संत 'रामप्रकाश' सो, द्वैत नाहीं देव है । 4 ।

भजन (116) राग:—कल्याण पद कवित

जपो प्यारे मन लाय, आप ने स्वरूप को । टेर ।

जप तप योग यज्ञ, ओम नाम रटे बिना ।
सिद्ध होत नहीं कोई, मंत्र के अनूप को । 1 ।

धर्म विद्या ग्रंथ वर्ण, सब का है मूल रुप ।
नाम पर ब्रह्म को ये, भेद लखो गूप को । २ ।

ओम ही सकल घट, व्यापक अटल अज ।
गायत्री से आदि सब, ओम माहि चूप को । 3 ।

साधन सहित गायन, मन चित बुद्धि लाय ।
जपे 'रामप्रकाश' जो, पावे सत रूप को । 4 ।

भजन (117) राग—झंझोटी पद

समझ हंसा ! सोहं रुप विचार । टेर ।

त्वंपद ततपद और असीपद, ले अधिष्ठान उचार । 1 ।
हंसो सोहं सोहं हंसो, उलट पलट इकसार । 2 ।
आप भूलाया आप गमाया, अपना आप अपार । 3 ।
सत चेतन आनंद तूं ही, एक अद्वैत उदार । 4 ।
'रामप्रकाश, अनूप अखंडी, अचल अनंत अविकार । 5 ।

भजन (118) राग—झंझोटी पद

समझ मना ! गुरु की रमझ उदार । टेर ।
रमझ समझ में आप परखो, अपनी भूल विडार । 1 ।
तूं तत चेतन आनंद अनादी, सत सोहं सरदार । 2 ।
जनम मरण बंध मुक्ति खोजे, भ्रम अज्ञान निहार । 3 ।
मनण मान कर निज को भूला, तूं ही आप अविकार । 4 ।
संशय द्वैत सर्व तज आपा, उल्टा आप विचार । 5 ।
'रामप्रकाश' अगोचर पूरण, गुरु उत्ताम की सार । 6 ।

भजन (119) राग—झंझोटी पद

समझ मना सत चित आनन्द आप । टेर ।
त्रिगुण माया का लेश न कोई, त्रिकाल अबाध्य जाप ।1।
सब का दृष्टा चेतन साक्षी, पूरण आप अजाप ।2।
पांच क्लेश संशय भ्रम नाही, नहीं उपाधि त्रय ताप ।3।
मन वाणी गम द्वैत न दरशे, पूरण ब्रह्म अमाप ।4।
अपना भूल आप हो बैठा, 'रामप्रकाश' सोई आप ।5।

भजन (120) राग—झंझोटी पद

समझ मना ! रमता राम उचार । टेर ।
सूरत मूरत बिन घट मठ माहि, पूरण सो इकसार ।1।
दूध में घीव रमे जिस भांति, ले साधन उर धार ।2।
मेंहदी में रंग रमा हद पूरा, ले विधि युक्ति उदार ।3।

मिश्री में मिष्ठान हजूरा, पूर्ण व्यापक सुखकार । 4 ।
नाना भूषण हाटक सोई, ता भिन्न रूप असार । 5 ।
बहु विधि शस्त्र बने हद भारी, लोहा रूप सुधार । 6 ।
'रामप्रकाश' सोहं सोई, अपना आप दीदार । 7 ।

भजन (121) राग—बिलावल आरती पद

ॐ जय सच्चिदानंद स्वामी, प्रभू जय सच्चिदानंद स्वामी ।
अखण्ड अयोनी पूर्ण घन हो, व्यापक घन नामी । टेर ।
अजर अमर अविनाशी ज्योति, अचल अनूप समाना ।
नाम रूप बिन दृष्टा सब का, अटल अगोचर थाना ।1।
द्वैत अद्वैत परे निज वासा, निज साक्षी अधिष्ठाना ।
कहण अकहण में नहीं आता, मन वाणी के ध्याना ।2।
वेद हरिहर ब्रह्म नारद, संत ऋषि नाना ।
गाय थके सब नेति नेति कर, पार नहीं पाना ।3।
त्रिगुण त्रिपुटी रहित अनामी, महा सूक्ष्म बाना ।
जीव ईश माया पर साक्षी, ब्रह्म तत्व ज्ञाना ।4।
निर्गुण आरती ज्ञानी गावे, पाये मोक्ष आना ।
'रामप्रकाश' समावे निज में, आवा गमन मिटाना ।5।

भजन (122) राग:—पद छुटकर

मैं जाण्यो आप अपार, भ्रम को खोयो री । टेर ।
छेरी संग में भूलासिंह ज्यूं, पराक्रम रूप सुधारु । 1 ।
सूआ भूल तार में बंधिया, यूं संशय दीयो त्रिडार । 2 ।
बंदर बंधिहा रस के लालच, मन मूठी दीवी उधार । 3 ।
रज्जू सर्प की भ्रान्ति खोई, जाण वस्तु निरधार । 4 ।
'रामप्रकाश' आप सत सोई, मुझ में नही विकार । 5 ।

भजन (123) राग—पद छुटकर

मैं अपने में मस्तान, मो बिन कोई ना । टेर ।

आप अनादी अटल अयोनी, शुद्ध चेतन अधिष्ठान । 1
अचल अखण्डो द्वैत न मण्डो, मन वाणी गम हान । 2
व्यापक घट मठ घन ज्यूँ चेतन, सत आनंद सो कल्यान । 3
'रामप्रकाश' भ्रम नही भ्रान्ति, द्वैत खोय निरवान । 4

भजन (124) राग—पद छुटकर

निज सत चित आनंद रूप, अपनो जाण्यो रे । टेर ।

तीन शरीर अवस्था तीनों, सब सीपी भोडल सम ऊप । 1
पांच कोश तंत प्राण पांच को, मे साक्षी आप अनूप । 2
जीव ईश ब्रह्म माया सारे, भेद सभी लय गूप । 3
'रामप्रकाश' दृष्टा सत चेतन, मन वाणी लख न चूप । 4

भजन (125) राग—पद छुटकर

निज एक ब्रह्म ततसार, द्वैत मिटायो री । टेर ।

नाना कल्पना भूषण चित्रण, सब धातु एक विचार । 1
खांड खिलौना नाना बणिया, सब मिश्री रूप उचार । 2
नाना भांडा मृतिका घडिया, सब कारण उपाधि कुम्हार । 3
नाना शस्त्र भाला तमंचा, सब लोह तलवार कटार । 4
नाना तरंग आवे अरु जावे, सब जल के रूप आधार । 5
'रामप्रकाश' अनूप अखण्डो, सब माया उपाधी टार । 6

* इति श्री निर्गुणराम भजनावली समाप्त *

हरि जीया सुख अचल के, शिष्य सु उत्तमराम ।
रामप्रकाश ता शिष्य हूं, शहर जोधपुर धाम ॥

मुद्रक : अम्बिका प्रिन्टर्स, दरगाह बाजार, अजमेर

मे

सचित्र करामात स्पेशल

इस पुस्तक में योग विद्या हिप्नोटिज्म द्वारा एक दूसरे मनुष्य का
स्य जानकर दूर देश की बात को एक ही स्थान पर बैठे हुए क्षण
जान लेना, पृथ्वी में गड़ा हुआ धन पशु पक्षियों की बोली पहचानना
तर्ध्यान होना, चाहे जितना हल्का व भारी हो जाना, बिना औष-
ध्रान किये कठिन रोगों की चिकित्सा करना, भूत प्रेत इत्यादि को
ाना, मृतक आत्माओं से बातचीत करना, यन्त्र, मन्त्र तन्त्र वशी-
रण इत्यादि का सरलता पूर्वक वर्णन किया गया है। मूल्य ५०)रु.
क व्यय सहित।

स्त्री पुरुष के गुप्त भेद

जो होशियार पुरुष को भी मालूम नहीं, इस अपूर्व पुस्तक में पढ़िये
ापने अनेकों कोक शास्त्र तथा यौवन सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ी होंगी
ेकिन इसके पढ़ने से यौवन का पूरा आनन्द प्राप्त होगा। सुहागरात
त्री-पुरुष के सम्बन्ध पर यूरोप, एशिया और भारत के बड़े-२पुरुषों
े अनुभव, अनेकों रंगीन चित्र, प्राचीन काल के कई भेद। पूरी
ारीफ सभ्यता के विरुद्ध है। मूल्य ५०) रु. डाक खर्च सहित।

नाथ उपासना

(लेखक तान्त्रिक प्रकाश)

नाथ-सम्प्रदाय के भक्तों के लिए तो यह पुस्तक एक खजाने
के समान हैं इसमें नव नाथों की उपासना, विधि, पूजन विधि,
नाथ सिद्धान्त, सिद्ध पुराण, नव नाथ कथा, ज्ञान गोदड़ी, नाथ
चरित्र, गणेश गायत्री, गोरक्ष गायत्री, नेम जाप एवं समाधि विधि
एवं गायत्री मन्त्र दिये हैं। मूल्य 20) रुपये।

-: जीवन को ऊँचा उठाने वाली पुस्तकें :-

आतम ज्ञान दर्पण:-भक्ति ज्ञान वैराग्य निष्काम कर्मयोग,तात्विक विषयों की पुस्तक में सबको सन्तोष होना बहुत कठिन है इसलिये गीता, रामायण, भागवत, विद्या सागर, बोध सागर, तत्त्व-चितामणी विचार सागर इत्यादि कई धर्म शास्त्रों का निचोड़ इस एक ही ग्रन्थ में दे दिया गया है। मूल्य २०) रुपये।

आत्म विवेक :-जैसलमेर निवासी साधु प्रतापराम जी ने वेदान्त प्रेमियों के लिये इस पुस्तक को अति सरल ढंग से बनाया है। वेदांत की दुरुह प्रक्रिया को प्रश्नोत्तर के रुप में अति सरल कर दिया गया है इसमें वेदान्त सम्बन्धि गूढ़ बातें एवं पद भी दिये है जिसमें भावों का वर्णन है। मूल्य २०) रुपये।

गुरु चेला संवाद भाषा

इस पुस्तक में आध्यात्मिक ज्ञान संबंधी चर्चा है गुरु से लगाकर मोक्ष की प्राप्ति के साधन तथा समाधि अवस्था का वर्णन आत्मा का निवास मन की चंचलता आदि पर तथा अन्य सैंकड़ों प्रश्नों का शिष्य द्वारा शंका करने पर गुरु ने शंका निवारण किया है। उनका बहुत ही सरल उपाय इस पुस्तक में दिया है। पुस्तक सारी इन्हीं स्वामीजी द्वारा लिखी गई। एक दफा अवश्य मंगवाकर पढ़ें मूल्य 20) रु. डाक खर्च 4) रु. अलग।

नोट—5) रु. एडवान्स आये बिना पुस्तक नहीं भेजी जायेगी।

जनहित वाणी प्रकाश अवश्य पढ़ें—मूल्य 15/- रु.।

आज ही खरीदें अथवा पत्र लिखकर हमसे मंगवाये।

चिर परिचित वर्षों पुराना प्रकाशन देखकर ही पुस्तक खरीदें :-

श्री सरस्वती प्रकाशन

सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर

हमारे यहां मिलने वाले अनमोल रत्न इन्हें पढ़कर अपना जीवन सफल बनावें ।

पुस्तक	मूल्य	पुस्तक	मूल्य
असली कबीर बीजक	150)	सिद्ध मानस तन्त्रम्	30)
कबीर वाणी संग्रह बड़ी	20)	अलख उपासना	10)
कबीर भजनामृत	20)	जमा जागरण विधि	10)
कबीर सन्तोष बोध बड़ा	75)	रामदेव जीवन चरित्र बड़ा	10)
भक्ति सागर असली	80)	लच्छीराम के ख्याल सेट	30)
ब्रह्म ज्ञान भक्ति प्रकाश	20)	गोरख तन्त्र मन्त्र साधना	30)
देव प्रकाश वाणी संग्रह	20)	रामदेव चौबीस प्रमाण असली	25)
लिखमाराम माली शास्त्र	25)	रामदेव लीला प्रमाण	15)
राजा मानसिंह का शास्त्र	120)	मेघवंश इतिहास	150)
कबीर भजन गुटका बड़ा	20)	चाणक्य नीति जीवन चरित्र	40)
कबीर बीजक मूल बड़ा	25)	विदुर नीति जीवन चरित्र	40)
बनानाथ अनुभव प्रकाश	30)	हरि भजन प्रकाश	25)
सरल मन्त्र तन्त्र प्रयोग	30)	बगड़ावत महाभारत असली	100)
कबीर मन्सूर असली	300)	सुन्दर पद वाणी संग्रह	20)
कबीर सागर मोटा	350)	असली इन्द्रजाल मोटा	100)
अचलराम प्रकाश	45)	सचित्र करामात असली	35)
वाणी प्रकाश बड़ा	50)	सावरी तन्त्र सेबड़ का जादू	35)
देशी दवाईयों की किताब	50)	शिव महापुराण बड़ा	225)
सत्संग भजन माला	10)	रामायण बड़ी तुलसीकृत असली	225)
प्राचीन भजनमाला गुटका	20)	श्री मद्भागवत सुखसागर	225)
गोरखनाथ भजनमाला	15)	महाभारत बड़ी असली	105)
गोरख बोध वाणी संग्रह	20)		
गोरख मच्छन्द्र वाणी	10)		

श्री सरस्वती प्रकाशन

सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर

Scanned with CamScanner

हमारे पुस्तक भण्डार में उपलब्ध पुस्तकें VPP द्वारा मंगवाईये

पुस्तक	मूल्य
कबीर सा. अनुराग सागर	20)
कबीर शब्दावली नई बड़ी	150)
कबीर ज्ञान गुदड़ी	10)
धरमदास शब्दावली	20)
जनहित वाणी प्रकाश	20)
दादू दयाल शब्दावली	30)
सुन्दरदास वाणी संग्रह	20)
सुखराम वाणी सग्रह	20)
भीकम सिंह भजन	35)
हरीराम वाणी जोधपुर	35)
संत वाणी विलास	30)
पलटू साहेब वाणी भजन	60)
चरणदास की वाणी	60)
गरीवदास वाणी	20)
रेदास जी वाणी	25)
रेदास जीवन चरित्र	40)
दरियावसाहेबवाणीमारवाड़ी	25
बाबा मलूक सा वाणी	25)
मीरा बाई वाणी	25)
मीरा बाई शब्दावली	15)
कबीर साखी संग्रह	40)
देव प्रकाश वाणी संग्रह	15)
अचलराम भजन प्रकाश	35)
राजा मानपद संग्रह 3 भाग	120)
गोरख मन्त्र तंत्र साधना	30)
गोरख मच्छेद वाणी	10)
परमानन्द भारती शास्त्र	35)
चेतन भारती शास्त्र	25)
कल्याण भारती शास्त्र	60)
कबीर वाणी संग्रह नई	20)
कबीर भजनामृत	20)
कबीर सन्तोष बोध	80)
कबीर मन्सूर बड़ा	300)
कबीर सागर बड़ा	400)
मारवाड़ी वाणी प्रकाश	15)
आत्म ज्ञान दर्पण	20)
आत्म विवेक	20)
जीवादास वाणी संग्रह	20)
ब्रह्मज्ञान वाणी प्रकाश	25)
नवलराम वाणी भजन	35)
गोगा चरित्र हिन्दी	50)
पाबूजी का जीवन चरित्र	25)
सिद्ध मानस तन्त्रम्	20)
गोरख महापुराण बड़ा	75)
शंकरदास भजन वाणी	25)
रणजीत वाणी प्रकाश	15)

पता - श्री सरस्वती प्रकाशन, सैन्ट्रल बैंक के पीछे,

चूड़ी बाजार, अजमेर

-: श्री स्वामी गोकुलदास जी लिखित पुस्तकें :-

1. रामदेव चौबीस प्रमाण—यह चौबीस प्रमाण भगवान रामदेवजी के मुख से कहे हुवे हैं। अवश्य पढें। आश्चर्य चकित करने वाले मूल्य २५) ००

2. मेघवंश इतिहास—तमाम मेघवंशी जाति का इतिहास इस पुस्तक में दिया गया है देखने लायक पुस्तक है।
मूल्य १५०)०० डाक खर्च १५)००

3. रूपांदे की बड़ी बेल—धारूमाल रुपांदे का सारा हाल इस पुस्तक में बताया गया हैं। बड़ी अच्छी पुस्तक है।
मूल्य १०)०० डाक खर्च ४)००

4. भजन विलास— इसमें रामदेवजी के आरोधी भजन दिये गये है। भजन पढें रोचक है गाने वालों के लिए तोहफा हैं।
मूल्य ७)००

5. भजन माला— स्वामी गोकुलदासजी के लिखे भजन सब इस पुस्तक में दिये गये हैं। मूल्य १०)०० डाक खर्च ५)००

6 पड़दा प्रमाण— इसमें रामदेवजी ने जो समाधि ली थी उस समय की कथा भजनों में दी है। मूल्य १०) डाक खर्चा ४)

7. अलख उपासना— अलख उपासना कैसे करनी चाहिए क्यों करनी चाहिए। सारी बात इस पुस्तक में बतलाई गई है।
मूल्य १०)०० डाक खर्च ४)००

8. जम्मा जागरण विधि— इस में रामदेबजी महाराज के जमा जगाने की सम्पूर्ण विधि दी है। मूल्य १०)०० डाक खर्च४)००

नोटः-कृपया पत्र के साथ १०) रुपयें एड़वास M.O. से भेजे।

मिलने का पता :-

पता-श्री [illegible] प्रकाशन, सैन्ट्रल बैंक के पीछे,

[illegible] बाजार, अजमेर

नाथ इतिहास

(लेखक :- प्रकाशनाथ चौहान)

इस पुस्तक में नाथ समाज की उत्पत्ति, परिचय, आबादी मन्दिर, मठ, गोरखनाथ चरित्र नाथ समाज का इतिहास गुरु गोरखनाथ एवं उनके शिष्यों का परिचय व जन उपयोगी सिद्ध गोरख शाबर मन्त्र एवं अनेकों दुर्लभ खोजों से अप्राप्त साहित्य जो बड़ी कठिनता से एकत्रित किया गया है उन सभी को लेखक ने बड़ी मेहनत से क्रमवार करके तैयार किया है नाथ समाज के लिए अनमोल तोहफा है अवश्य पढ़ें मूल्य 120) रु. डाक खर्च अलग ।

राजस्थान के राजपूतों का संक्षिप्त इतिहास

इस पुस्तक में राजस्थान राज्य में फैले समस्त राजपूतों का इतिहास बहुत ही शोध करके बनाया गया है । जो आज तक कहीं उपलब्ध नहीं था आप भी पढ़ें एवं जानकारी प्राप्त करें ।

मूल्य 25) रु. डाक खर्चा अलग ।

क्षत्रिय वंशावली

यह पुस्तक स्व. डा. गणपतसिंह जी (गणराज) ग्राम निवासी द्वारा अथक परिश्रम करके राजपूत (क्षत्रिय) जाति के लिए बनाई गई है । राजपूत जाति का काफी मात्रा में विस्तार है । लोगों को उनके पूर्वजों तथा जाति की जानकारी नहीं होती । कहते भी है । प्रत्येक क्षत्रिय नवयुवक को छत्तीस वंश क्षत्रिय की वंशावली से परिचित होना अनिवार्य है । मूल्य 20) डाकखर्चा अलग

पता :- श्री सरस्वती प्रकाशन

सेन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर

मुद्रक : अम्बिका प्रिन्टर्स, मधुशाह गली, दरगाह बाजार, अजमेर

भवसागर से पार लगाने वाली पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
कबीर सा. का अनुराग सागर	15)
कबीर शब्दावली नई बड़ी	125)
कबीर ज्ञान गुदड़ी	10)
धरमदास शब्दावली	15)
जनहित वाणी प्रकाश	15)
दादू दयाल शब्दावली	30)
सुन्दरदास वाणी संग्रह	20)
सुखराम वाणी सग्रह	10)
भीकम सिंह भजन	35)
हरीराम वाणी जोधपुर	25)
संत वाणी विलास	30)
पलटू साहेब वाणी भजन	60)
चरणदास की वाणी	60)
गरीबदास वाणी	20)
रैदास जी वाणी	15)
रैदास जीवन चरित्र	40)
दरियावसाहेबवाणीमारवाड़ी	25
बाबा मलूक सा वाणी	15)
मीरा बाई वाणी	25)
मीरा बाई शब्दावली	15)
कबीर साखी संग्रह	40)
देव प्रकाश वाणी संग्रह	15)
अचलराम भजन प्रकाश	35)
राजा मानपद संग्रह 3 भाग	120)
गोरख मन्त्र तन्त्र साधना	30)
गोरख मच्छेद वाणी	10)
परमानन्द भारती शास्त्र	35)
चेतन भारती शास्त्र	25)
कल्याण भारती शास्त्र	60)
कबीर वाणी संग्रह नई	20)
कबीर भजनामृत	20)
कबीर सन्तोष बोध	60)
कबीर मन्सूर बड़ा	250)
कबीर सागर बड़ा	350)
मारवाड़ी वाणी प्रकाश	15)
आत्म ज्ञान दर्पण	20)
आत्म विवेक	20)
जीवादास वाणी संग्रह	20)
ब्रह्मज्ञान वाणी प्रकाश	25)
नवलराम वाणी भजन	25)
गोगा चरित्र हिन्दी	50)
पाबूजी का जीवन चरित्र	25)
सिद्ध मानस तन्त्रम्	20)
गोरख महापुराण बड़ा	75)
शंकरदास भजन वाणी	25)
रणजीत वाणी प्रकाश	15)

पता - श्री सरस्वती प्रकाशन, सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर

Scanned with CamScanner